भूतों की लोक कथाऐं

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Bhooton Ki Lok Kathayen (Ghosts Folktales)
Cover Page picture: Ghosts
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5
भूतों की लोक कथाऐं 7
1 डरा हुआ दर्जी 9
2 निडर आदमी 17
3 छोटा निडर जौन 30
4 शापित रानी का महल 37
5 पानी का भूत और मछियारा 49
6 ज़ोर से बोलने वाली स्त्री 68
7 चूहों की शादी 79
8 भूत ब्राह्मण 89
9 भूतनी पत्नी 98
10 भूत जो थैले में बन्द होने से डरता था 103
11 भूत जो भाग गया 110
12 बॉसुरी 120
13 शिकारी और उसकी करामाती बॉसुरी 129
14 टिनटिन्यिन और भूतों की दुनियॉ का राजा 137

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

भूतों की लोक कथाऐं

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़े से सबसे छोटा।

भूत, आत्माऐं, जिन्न, राक्षस, प्रेत, जादूगर और जादूगरनियॉ आदि किसी न किसी रूप में दुनियॉ में सब जगह पाये जाते हैं। और इसी लिये सभी धर्मों में इनमें विश्वास रखने वाले भी मौजूद हैं और इनको भगाने वाले भी। इस पुस्तक में हम दुनियॉ के कई देशों से इकट्ठी की गयी इन्हीं भूतों से सम्बन्धित कुछ लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा जानने वालों के लिये इस पुस्तक में प्रकाशित कर रहे हैं। भूतों की कहानियॉ तो हजारों में हैं उन पर कई पुस्तकें भी मौजूद हैं। पर यहॉ केवल भूतों की कुछ लोक कथाऐं ही हिन्दी में दी जा रही हैं।

भूत का नाम सुन कर डरना नहीं। हर भूत डरावना नहीं होता। उनमें से कुछ भूत दोस्त भी हो जाते हैं जिनकी याद हमेशा आती रहती है। इसके अलावा भूतों की कुछ कहानियॉ हॅसी की और मजेदार भी होती हैं उनसे डर नहीं लगता बल्कि उन्हें बार बार पढ़ने का मन करता है।

इससे पहले हमने राक्षसों की लोक कथाऐं प्रस्तुत की थीं।[1]

आशा है कि ये कहानियॉ दूसरे देशों के जीवन और उनके विश्वासों की एक झलक प्रस्तुत करने में सहायता करेंगीं।

[1] "Rakshason Ki Lok Kathayen" by Sushma Gupta published in Hindi language in two volumes.

1 डरा हुआ दर्जी[2]

भूतों की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के स्कौटलैंड देश में कही सुनी जाती है।

स्काटलैंड के रहने वाले एक लेयर्ड[3] मैकडोनाल्ड[4] ने अपना यह नियम बना रखा था कि रात को सोने से पहले वह हर रोज किले की दीवारों पर चलता था। उसका कहना था कि इससे उसको रात को नींद अच्छी आती थी।

एक बार जब वह इस तरह किले की दीवार पर चल रहा था तो उसको अपने शरीर में दो जगह कॅपकॅपी महसूस हुई – एक बाहर की तरफ और एक अन्दर की तरफ।

जो कॅपकॅपी उसको बाहर की तरफ महसूस हुई वह तो ठंडी रात की वजह से थी। ठंडी हवा उसके जैकेट[5] में से हो कर अन्दर तक पहुॅच रही थी। वह थोड़ा बुड्ढा हो गया था इसलिये अब उसको ठंड पहले के मुकाबले में ज़्यादा भी लगने लगी थी।

---

[2] The Haunted Tailor – a folktale from Scotland, Europe. Adapted from the Website : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=194
Retold and written by Mike Lockett.

[3] A Laird is a member of the Scottish gentry, who bears the designation Laird of X, where X is the place name. In the non-peerage table of precedence, a Laird ranks below a Baron and above an Esquire

[4] Laird MacDonald

[5] Translated for the word "Kilt" – Kilt is knee-length garment with pleats at the rear originating in the traditional dress of the men in the Scottish highlands of the 16th century.

पर दूसरी कॅपकॅपी उसको दूर गॉव के चर्च की एक खिड़की से आती अजीब सी रोशनी देख कर हुई। यह चर्च जहॉ वह खड़ा हुआ था वहॉ से कुछ मील की दूरी पर था।

उसको लगा कि उधर से उसने किसी के रोने और चिल्लाने की आवाज भी सुनी। उसने यह भी सुन रखा था कि चर्च के पास की जगह डरावनी थी। हर रोज वहॉ शाम को सूरज छिपने के बाद एक भयानक राक्षस आया करता था।

जब मैकडोनाल्ड वहॉ कॉपता सा खड़ा था तो उसके दिमाग में एक विचार आया जिससे वह दोनों तरह की कॅपकॅपाहट से छुटकारा पा सकता था।

वह अपनी जैकेट को एक दूसरी तरह के कपड़े यानी पैन्ट से बदल लेगा। यह पैन्ट रात को ठंडी हवाओं में घूमने के समय ज़्यादा गर्म रहेगी।

तो यह तो उसको बाहर से पैदा करने वाली कॅपकॅपाहट से बचायेगी और दूसरी अन्दर वाली कॅपकॅपाहट के लिये वह उस दर्जी की सहायता लेगा जो उसकी यह पैन्ट सिलेगा।

सो अगले दिन मैकडोनाल्ड ने अपने दर्जी को किले में बुलाया और उससे कहा — "तुम पैन्ट सिलने के लिये मेरा नाप ले लो और फिर उसको सिलने के लिये कहीं किसी खास जगह चले जाओ।"

दर्जी की कुछ समझ में नहीं आया तो उसने पूछा — "जनाब, मैं कहॉ चला जाऊँ?"

मैकडोनाल्ड बोला — "बजाय सीधे घर जाने के मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी यह पैन्ट गॉव के चर्च में सिलो। मैं तुमको इसको कब्रों के बीच में सिलने के लिये ज़्यादा पैसे दूँगा। इस तरह से मैं बिना वहॉ जाये यह जान पाऊँगा कि चर्च को कौन डरावना बना रहा है।"

जब दर्जी ने यह सुना तो वह तो खुद भी डर के मारे कॉप गया। उसकी ऐसी कोई इच्छा नहीं थी कि वह उस जीव को देखे जो चर्च को डरावना बना रहा था।

पर उसको पैसे अच्छे मिल रहे थे सो उसने अपनी हिम्मत बटोरी और वह उसी समय उसकी पैन्ट वहॉ सिलने के लिये तैयार हो गया।

मैकडोनाल्ड ने सोचा कि पैन्ट सिलते सिलते उसको वहॉ रात तो हो ही जायेगी पर वह दर्जी भी होशियार था। उसने उस पैन्ट की सिलाई इस तरह से सोच कर रखी थी कि वह उस पैन्ट को वहॉ किसी आत्मा के आने और उसको परेशान करने से पहले ही खत्म कर ले।

सो दर्जी सीधे चर्च गया। वह उसके लोहे के दरवाजे से अन्दर घुसा और सीधा कब्रिस्तान में चला गया। वहॉ उसने संगमरमर की एक कब्र पर अपना कपड़ा बिछाया और उसको मैकडोनाल्ड के नाप के अनुसार जल्दी जल्दी काटा।

उसके बाद वह चर्च के अन्दर गया। तब तक सूरज सिर पर चढ़ आया था। वहॉ उसने उसकी पैन्ट सिलनी शुरू कर दी।

चर्च शान्त था और कोई भी अजीब चीज़ न तो वहॉ उसको दिखायी पड़ रही थी और न सुनायी ही पड़ रही थी।

दर्जी ने अब पैन्ट की दूसरी टॉग सिलनी शुरू कर दी थी कि सूरज आसमान में से गायब हो गया। दर्जी ने एक मोमबत्ती जलायी और अपनी बढ़िया सिलाई जारी रखी।

अचानक चर्च का फर्श हिलने लगा। दर्जी की उॅगलियों के बीच में से सुई फिसल गयी और उसकी उॅगली में पहनने वाली टोपी[6] भी नीचे गिर गयी।

वह उनको उठाने के लिये नीचे झुका तो उसने बड़ी अजीब सी चीज़ देखी। चर्च के दरवाजे के सामने लगे कुछ टाइल्स अपनी जगह से हट गये और ऐसा लगा जैसे वहॉ एक नयी कब्र निकल आयी हो।

वह कब्र खुलती गयी और खुलती गयी और उसमें से एक बड़ा बदसूरत सा सिर बाहर निकल आया। वह बदसूरत सिर ज़ोर से चिल्लाया — "क्या तुम मेरा यह सिर देख रहे हो?"

[6] Translated for the word "Thimble" – Thimble is a little metal cap worn by tailors to save their finger tip from needle pricks.

दर्जी पैन्ट ऊपर को उठाते हुए बोला — "हॉ मैं देख रहा हूँ पर पहले मैं इसको सिल लूँ।" उसने उसकी तरफ न देखने का बहाना किया और अपना काम जारी रखा।

वह सिर कब्र में से थोड़ा सा और ऊपर निकला और फिर दर्जी से पूछा — "क्या तुम मेरी गर्दन देख रहे हो?"

दर्जी फिर पैन्ट ऊपर को उठाते हुए बोला — "हॉ मैं देख रहा हूँ पर पहले मैं इसको सिल लूँ।" उसने उसकी तरफ न देखने का फिर बहाना किया और पैन्ट के अन्दर का हिस्सा बाहर की तरफ पलट कर उसकी कमर की पट्टी सिलने लगा।

जमीन अब कुछ और ज़्यादा खुली और उस आदमी के बड़े कन्धे और ऊपर का धड़ निकल आया। वह फिर बोला — "क्या तुम मेरी यह चौड़ी छाती देखते हो?"

दर्जी बोला — "हॉ मैं देख रहा हूँ पर पहले मैं इसको सिल लूँ।" और उसने जल्दी जल्दी फिर सिलना शुरू कर दिया। अब उसकी सिलाई पहले की तरह से एक सी, सुन्दर और साफ नहीं आ रही थी।

अब तक चॉद भी आसमान में ऊपर चढ़ आया था और उसकी पैन्ट अभी तक सिली नहीं थी। दर्जी वहॉ से भाग जाना चाहता था पर उसको मालूम था कि अपने वायदे के अनुसार अगर उसने अपना काम इस चर्च में पूरा नहीं किया तो उसको पैसे नहीं मिलेंगे।

इतने में दो लम्बी बॉहें उस कब्र में से बाहर निकलीं और उस दर्जी की तरफ बढ़ीं और उसके साथ साथ निकली उसकी कमर भी। वह बोला — "क्या तुम मेरी यह मजबूत बॉहें देखते हो?"

दर्जी बोला — "हॉ मैं देख तो रहा हूँ पर पहले मैं इसको सिल लूँ।" वह और जल्दी जल्दी हाथ चलाने लगा पर अब उसके टॉके कुछ दूर दूर लग रहे थे। उसके हाथ अब उस कपड़े पर उड़ते से दिखायी दे रहे थे।

उस जीव ने कब्र में से अपनी एक टॉग बाहर निकाली और बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "क्या तुम मेरी यह लम्बी टॉग देखते हो?"

दर्जी बोला — "हॉ हॉ मैं सब देख रहा हूँ पर पहले मैं इसको सिल लूँ।" और उसने उस पैन्ट के आखीर के बहुत सारे टॉके जल्दी जल्दी लगाये और उनमें गॉठ लगा कर अपना काम खत्म कर दिया।

यह सब कर के उसने मोमबत्ती बुझा दी और उस जीव ने तभी कब्र में से अपनी दूसरी टॉग भी बाहर निकाली। अब उस जीव ने चलना शुरू कर दिया था।

दर्जी ने एक हाथ में अपना सिलाई का बक्सा पकड़ा और दूसरे हाथ में पैन्ट पकड़ी और दरवाजे की तरफ भाग लिया। जब वह बाहर भाग रहा था तो उसने अपने पीछे पैरों के आने की आवाज सुनी।

दर्जी ने और जल्दी चलना शुरू कर दिया तो उन पैरों की आवाज भी और तेज़ हो गयी। दर्जी चर्च का दरवाजा खोल कर बाहर निकला और तुरन्त ही दरवाजा बन्द कर दिया।

वह कब्रिस्तान में आधी दूर ही पहुँचा था कि उसने चर्च के दरवाजे के खुलने और बन्द होने की आवाज सुनी। वह कब्रिस्तान के दरवाजे से बाहर निकला और किले की तरफ भाग लिया।

उसने अपने पीछे कब्रिस्तान के दरवाजे की चरचराहट की आवाज भी सुनी और फिर पैरों की आवाज भी अपने पीछे आती सुनी।

दर्जी की हिम्मत नहीं पड़ी कि वह पीछे मुड़ कर देखता कि उसके पीछे क्या आ रहा था। वह तो बस किले की तरफ भागता ही चला गया।

उधर लेयर्ड मैकडोनाल्ड ने देखा कि दर्जी तो उसी के किले की तरफ भागा चला आ रहा है और उसके पीछे है एक बहुत बड़ा जीव जो उसको पकड़ना ही चाहता है।

उसने तुरन्त ही किले के दरवाजे खोलने का हुक्म दिया और समय रहते रहते ही उसके नौकरों ने किले का दरवाजा खोल दिया।

दर्जी किले के अन्दर घुस गया और इससे पहले कि वह जीव हाथ बढ़ा कर उसको पकड़ता उसके नौकरों ने दरवाजा बन्द भी कर दिया। उस जीव के हाथ केवल किले के लकड़ी के दरवाजे पर ही पड़ पाये।

मैकडोनाल्ड ने दर्जी को पैन्ट की सिलाई के पैसे दिये और साथ में उसको चर्च में सिलने के पैसे अलग से दिये। इस तरह से लेयर्ड ने अपनी दोनों तरह की कॅपकॅपाहट खत्म कर दीं।

उसकी बाहर से पैदा होने वाली कॅपकॅपाहट तो उस जैकेट की जगह वह पैन्ट पहनने से खत्म हो गयी और उसकी अन्दर की कॅपकॅपाहट तब खत्म हो गयी जब उसने चर्च के पादरी से उस जगह पर पवित्र पानी छिड़कवा दिया जहॉ से वह बहुत बड़ा जीव बाहर निकला था।

दर्जी ने कभी किसी को नहीं बताया कि उसके साथ क्या हुआ था। पर बाद में तो उसको बताने की जरूरत ही नहीं पड़ी।

हर आदमी उस जीव के बारे में जानता था जिसने उस दर्जी का पीछा किया था क्योंकि उसके बड़े बड़े हाथों के निशान किले के दरवाजे पर अभी भी पड़े हुए थे जब उसने उस रात उस दरवाजे को अपने हाथों से पीटा था।

2 निडर आदमी[7]

भूतों की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के आयरलैंड देश की लोक कथाओं से ली है। इस कथा में यह लड़का किसी भूत से नहीं डरता।

एक बार की बात है कि एक स्त्री थी जिसके लौरैन्स और कैरौल[8] नाम के दो बेटे थे। लौरैन्स शुरू से ही बड़ा निडर था और कैरौल शाम से ही घर में छिप कर बैठ जाता था।

उन दिनों आयरलैंड में कुछ ऐसा रिवाज था कि जब कभी कोई मर जाता था तो उसकी कब्र की तीन दिन तक रखवाली करनी पड़ती थी क्योंकि रात को कब्रिस्तान में प्रेत आत्माएँ घूमती रहती थीं और कभी कभी वे कब्र से शरीर को चुरा कर भी ले जाती थीं।

जब लौरैन्स और कैरौल की माँ मरी तो इन दोनों को भी अपनी माँ की कब्र की रखवाली करनी थी। कैरौल बोला — "भाई, तुम तो बड़े निडर हो तो आज तुम ही माँ की कब्र की पहरेदारी करो तो जाने।"

लौरैन्स बोला — "तुम क्या समझते हो कि मैं अपनी माँ की कब्र की रखवाली नहीं कर सकता? मेरे अन्दर इतना साहस है कि मैं

[7] Dauntless Man – a folktale from Ireland, Europe

[8] Lawrence and Carol – names of the two sons of a woman

यह काम बड़े आराम से कर सकता हूँ।" यह कह कर लौरैन्स चला गया।

वह मॉ की कब्र के पास पहुँचा और वहॉ पास में पड़े एक पत्थर के ऊपर बैठ कर पहरा देने लगा। बहुत रात बीत गयी। उसे नींद भी आने लगी कि उसने देखा कि बिना शरीर का एक सिर लुढ़कता हुआ चला आ रहा है।

वह डरा नहीं। उसने अपनी तलवार निकाल ली कि अगर वह उसके पास आया तो वह उसको अपनी तलवार से काट कर रख देगा। पर वह उसके पास आया ही नहीं।

लौरैन्स भी उसको बराबर देखता रहा। इतने में सवेरा हो गया। वह बिना शरीर का सिर गायब हो गया और इधर लौरेन्स भी अपने घर वापस आ गया।

कैरौल ने पूछा — "भाई, तुमने कब्रिस्तान में कुछ देखा क्या?"

लौरैन्स बोला — "हॉ, देखा तो था, और आज अगर मैं वहॉ न होता तो मेरी मॉ के शरीर की चोरी ज़रूर हो जाती।"

कैरौल ने फिर पूछा — "जो कुछ तुमने देखा वह ज़िन्दा था कि मुर्दा?"

लौरैन्स बोला — "यह तो मुझे पता नहीं चला क्योंकि वह तो बिना शरीर का एक सिर था।"

कैरौल मुस्कुरा कर बोला — "तुम डरे नहीं?"

लौरैन्स बोला — "नहीं, बिल्कुल भी नहीं। तुम्हें मालूम नहीं क्या कि मैं दुनियॉ में किसी भी चीज़ से नहीं डरता।"

कैरौल बोला — "तो फिर तुम अगर आज फिर से मॉ की कब्र की पहरेदारी करो तो जानूँ?"

लौरैन्स बोला — "आज की यह शर्त मैं तुमसे लगाता हूँ। आज मुझे नींद आ रही है। मॉ की कब्र की रखवाली के लिये आज तुम जाओ।"

कैरौल बोला — "मुझे तो अगर कोई दुनियॉ भर का खजाना भी दे न, तो भी मैं यह काम नहीं कर सकता।"

लौरैन्स बोला — "पर अगर आज कब्र की पहरेदारी न की गयी तो मॉ का शरीर चला जायेगा।"

कैरौल बोला — "अगर तुम आज और कल के बदले में यह काम कर लो तो फिर मैं तुमसे कभी किसी काम के लिये नहीं कहूँगा। पर मुझे ऐसा लग रहा है कि जैसे तुम कुछ डर गये हो।"

लौरैन्स बोला — "तुमको यह बताने के लिये कि मैं डरा नहीं हूँ मैं दोनों दिन मॉ की कब्र की पहरेदारी करूँगा।" और यह कह कर वह सोने चला गया।

शाम होने पर वह उठा, अपनी तलवार सँभाली और कब्रिस्तान की तरफ चल दिया। वह सीधा उसी पत्थर के पास पहुँचा जहॉ वह पिछले दिन बैठा था और उसी पत्थर पर बैठ कर अपनी मॉ की कब्र की पहरेदारी करने लगा।

आधी रात के करीब फिर उसको कोई बड़ी सी चीज़ ज़ोर की आवाज के साथ अपनी तरफ आती दिखायी दी। उसने तुरन्त अपनी तलवार निकाली और उससे उसके दो टुकड़े कर दिये। मगर तुरन्त ही वे दोनों टुकड़े गायब भी हो गये।

सुबह होने पर लौरैन्स घर वापस आ गया।

कैरौल ने उससे फिर पूछा — "भाई, आज भी तुमने कहीं कुछ देखा क्या?"

लौरैन्स बोला — "हॉ देखा था और अगर आज भी मैं मॉ की कब्र की पहरेदारी न कर रहा होता तो आज तो मॉ का शरीर उसकी कब्र से ज़रूर ही चला जाता।"

कैरौल ने पूछा — "क्या वही बिना शरीर वाला सिर फिर से वहॉ आया था?"

लौरैन्स बोला — "नहीं, अबकी बार वह तो नहीं था पर वह कोई बड़ी सी काली सी चीज़ थी जो मेरी मॉ की कब्र खोद रही थी तभी मैंने अपनी तलवार से उसके दो टुकड़े कर दिये।"

उस दिन लौरैन्स फिर सो गया और जब वह शाम को उठा तो फिर अपनी तलवार ले कर कब्रिस्तान की तरफ चल दिया। और फिर उसी पत्थर पर बैठ कर मॉ की कब्र की पहरेदारी करने लगा।

इस बार आधी रात के बाद उसे कोई सफेद सी चीज़ आती दिखायी दी। वह तुरन्त ही अपनी तलवार निकाल कर उसे भी मारने के लिये तैयार हो गया।

लौरैन्स ने देखा कि उस सफेद चीज़ के ऊपर एक आदमी का सिर था और उसके दॉत बहुत बड़े थे।

जैसे ही लौरैन्स ने उसको मारने के लिये अपनी तलवार उठायी तो वह सिर बोला — "रुक जाओ, तुमने अपने मॉ के शरीर की रक्षा की है और तुम्हारे जैसा बहादुर आदमी तो इस आयरलैंड की धरती पर और दूसरा कोई है भी नहीं। अगर तुम ढूँढने निकलोगे तो एक बहुत बड़ा खजाना तुम्हारा इन्तजार कर रहा है।"

सवेरा होने पर लौरैन्स घर पहुँचा तो कैरौल ने फिर पूछा — "भाई, आज भी तुम्हें कोई दिखायी दिया क्या?"

लौरैन्स बोला — "हॉ दिखायी तो दिया परन्तु क्योंकि मैं वहॉ था इसी लिये मेरी मॉ का शरीर बच गया पर अब उसके शरीर को कोई खतरा नहीं है।"

अगले दिन लौरैन्स ने कैरौल से कहा कि वह उसको उसके हिस्से का पैसा दे दे क्योंकि वह देश विदेश घूमने जाना चाहता है। कैरौल ने उसके हिस्से का पैसा उसे दे दिया और लौरैन्स देश विदेश घूमने के लिये निकल पड़ा।

चलते चलते वह एक बड़े से शहर में पहुँचा। वहॉ वह एक डबल रोटी बनाने वाले के घर पहुँचा और खाने के लिये उससे डबल रोटी मॉगी।

डबल रोटी वाला उससे बात करने लगा तो बातों बातों में उसने पूछा कि वह कहॉ जा रहा था। लौरैन्स बोला कि वह किसी ऐसी चीज़ की तलाश में था जो उसे डरा सके।

डबल रोटी वाले ने पूछा "क्या तुम्हारे पास काफी पैसा है?"

इस पर लौरैन्स बोला "हॉ मेरे पास पचास पौंड हैं।

डबल रोटी वाला बोला — "ठीक है मैं तुमको पचास पौंड और दूँगा अगर तुम मेरे बतायी हुई जगह पर चले जाओ तो।"

लौरैन्स बोला — "अगर वह जगह यहॉ से बहुत दूर नहीं है तो मैं तुम्हारी शर्त मान लेता हूँ।"

डबल रोटी बनाने वाला बोला — "ओह नहीं नहीं, वह तो यहॉ से एक मील दूर भी नहीं है। शाम होने तक तुम यहीं रहो। रात में तुम उस कब्रिस्तान में जाना। वहॉ पर एक पुराना चर्च है। निशानी के तौर पर तुम वहॉ से मुझको वहॉ रखा हुआ एक प्याला ला कर दे देना।"

डबल रोटी बनाने वाले ने जब यह शर्त उसके सामने रखी थी तब उसे पूरा विश्वास था कि शर्त वही जीतेगा क्योंकि उस कब्रिस्तान में एक भूत रहता था और वहॉ जो कोई भी जाने की कोशिश करता था वह भूत उसको मार डालता था।

रात हुई तो लौरैन्स अपनी तलवार ले कर उस कब्रिस्तान में पहुँचा। वह चर्च के दरवाजे तक पहुँच गया। अपनी तलवार की

नोक मार कर उसने चर्च का दरवाजा खोला। दरवाजा खुलते ही उसमें से लम्बे सींगों वाला एक बड़ा काला बकरा निकला।

लौरैन्स ने तुरन्त ही उस पर तलवार से वार किया तो बकरा तो भाग गया पर वह जगह उसके खून से लाल हो गयी। लौरैन्स अन्दर चला गया, उसने वहॉ रखा प्याला उठाया और ला कर डबल रोटी वाले को दे दिया।

इस तरह लौरैन्स शर्त जीत गया।

डबल रोटी वाले ने पूछा — "भाई, तुमने वहॉ कुछ देखा?"

लौरैन्स बोला — "हॉ, मुझे वहॉ पर एक बड़ा काला बकरा दिखायी दिया था। उसको मैंने तलवार से मारा तो बकरा तो भाग गया पर तलवार के वार से उसका काफी खून बह गया। इतना कि उसमें एक नाव तैर सकती थी। मुझे लगता है कि वह बकरा तो अब तक कभी का मर गया होगा।"

सबेरा होते ही डबल रोटी वाले ने काफी लोगों को इकट्ठा किया और चर्च की तरफ चला तो वहॉ वाकई काफी सारा खून पड़ा पाया। यह सब देख कर वह पादरी के पास पहुँचा और उसको बताया कि अब चर्च में काला बकरा नहीं है।

पादरी को तो विश्वास ही नहीं हुआ सो वह खुद चर्च गया और वहॉ जा कर देखा तो वास्तव में अब वहॉ कोई काला बकरा नहीं था सो वह तो बहुत ही खुश हो गया। क्योंकि जब भी वह वहॉ पूजा

किया करता था वह काला बकरा आ कर उसकी पूजा की सारी चीज़ें इधर उधर कर दिया करता था।

आज उस पादरी ने निडर हो कर बिना किसी रोक टोक के पूजा की और लौरैन्स को खास आशीर्वाद दिया और साथ ही उसको पचास पौंड और भी दिये।

अगले दिन लौरेन्स फिर से अपने सफर पर निकल पड़ा। सारा दिन वह सफर करता रहा पर उसे कोई घर ही नहीं दिखायी पड़ा। आधी रात के समय वह एक सुनसान अकेली घाटी में आ गया। आसमान में पूरा चॉद खिला हुआ था। उसकी रोशनी पूरी घाटी में फैली पड़ी थी।

उसी रोशनी में उसने देखा कि एक जगह पर बहुत सारे लोग इकट्ठा हैं और वे दो आदमियों को भागते हुए देख रहे थे। इतने में उन दो आदमियों में से एक आदमी ने एक गेंद लौरैन्स की छाती में मारी।

लौरैन्स का हाथ तुरन्त ही अपनी छाती की तरफ चला गया ताकि वह उस गेंद को वहॉ से निकाल सके पर वहॉ तो गेंद नहीं थी बल्कि कुछ और ही था – वहॉ तो एक आदमी का सिर था।

लौरैन्स ने उस सिर को ही पकड़ लिया तो वह सिर चीखने लगा और बोला — "क्या तुमको मुझसे डर नहीं लग रहा है?"

लौरैन्स बोला — "नहीं, मुझे तुमसे डर क्यों लगेगा?" और लौरेन्स के ये शब्द बोलते ही वहॉ उसको दिखायी देने वाला सब

कुछ गायब हो गया और वह फिर से उस चॉदनी भरी घाटी में अकेला खड़ा रह गया।

चलते चलते वह एक दूसरे शहर में आया। वहॉ घूमते घूमते वह सड़क के किनारे बने एक बड़े से घर के सामने रुक गया। रात होने वाली थी सो वह रात को वहीं सोना चाहता था।

तभी एक नौजवान घर में से बाहर निकला और उससे पूछा — "क्या चाहते हो भाई?"

लौरैन्स बोला — "मैं एक ऐसी चीज़ की तलाश में हूॅ जिससे मैं डर जाऊॅ।"

वह नौजवान बोला तब तुमको दूर जाने की जरूरत नहीं है।"

कह कर वह उसको अपने सामने वाले घर में ले गया और बोला — "देखो, इस मकान में नीचे एक तहखाना है। वहॉ जा कर तुम अपने लिये आग जला लो। मैं तुम्हें खूब सारा खाना पीना भेज देता हूॅ। अगर तुम सुबह तक वहॉ रह गये तो मैं तुमको पचास पौंड दूॅगा।"

लौरैन्स बोला "मैं तैयार हूॅ।"

इतना कह कर लौरैन्स नीचे तहखाने में चला गया और वहॉ जा कर उसने आग जलायी। तभी एक लड़की उसके लिये खूब सारा खाना और शराब की बोतलें ले कर आ गयी। लौरैन्स ने आराम से खाना खाया और सोने के लिये लेट गया।

आधी रात के करीब वहॉ एक घोड़ा और सॉड़ आ गये और आपस में लड़ने लगे। लौरैन्स ने कुछ नहीं कहा, बस वह केवल उनकी लड़ाई देखता रहा। जब वे लड़ते लड़ते थक गये तो वे चले गये। उधर लौरैन्स भी सो गया।

सुबह उस नौजवान ने ही आ कर उसे उठाया। उस नौजवान को लौरैन्स को ज़िन्दा देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसने पूछा — "क्या तुमने रात को यहॉ कुछ देखा?"

लौरैन्स बोला — "हॉ देखा था। एक घोड़ा और एक सॉड़ आये और आपस में लड़ने लगे। वे करीब करीब दो घंटे तक लड़ते रहे फिर चले गये।"

उस नौजवान ने पूछा — "तुम डरे नहीं?"

लौरेन्स बोला "नहीं।"

वह नौजवान बोला — "अगर तुम आज रात को यहॉ और रुको तो मैं तुम्हें पचास पौंड और दूँगा।" लौरेन्स राजी हो गया।

रात दस बजे लौरैन्स सोने की तैयारी कर रहा था कि वहॉ दो काले बकरे आये और आ कर लड़ने लगे। लौरैन्स आज भी उनकी लड़ाई केवल देखता रहा, कुछ किया नहीं। रात को बारह बजे के बाद वे भी चले गये।

अगले दिन उस नौजवान ने आ कर पूछा — "क्या कल रात तुम्हें कुछ दिखायी दिया?"

लौरैन्स बोला — "हॉ, कल रात यहॉ दो काले बकरे आये थे। वे भी लड़ते रहे और फिर चले गये।"

नौजवान ने पूछा — "तुम डरे नहीं?"

"नहीं तो।"

नौजवान बोला — "अच्छा, तो आज की रात तुम और रुको और मैं तुमको कल पचास पौंड और दूँगा।"

सो तीसरी रात जब लौरैन्स सोने की तैयारी कर रहा था तो एक बूढ़ा वहॉ आया। यह वही बूढ़ा था जो लौरैन्स के पास तब आया था जब वह अपनी मॉ की कब्र की रखवाली कर रहा था और जिसने उसे खजाने की खोज में यात्रा पर भेजा था।

वह लौरेन्स से बोला — "तुम आयरलैंड के सबसे अच्छे आदमी हो। मुझे मरे हुए बीस साल हो गये तबसे आज तक मैं तुम्हारे जैसे आदमी की तलाश में हूँ।

आओ मैं तुमको खजाना दिखाता हूँ। तुम्हें याद है न? जब तुम अपनी मॉ की कब्र की पहरेदारी कर रहे थे तब मैंने तुमसे कहा था कि एक बहुत बड़ा खजाना तुम्हारा इन्तजार कर रहा है। आज वह समय आ गया है।"

वह लौरेन्स को और भी नीचे वाले तहखाने में ले गया और सोने से भरा एक बड़ा सा बर्तन दिखाते हुए बोला — "यह सब खजाना तुम्हारा है अगर बीस पौंड तुम मेरी विधवा पत्नी मैरी को दे दोगे और उससे मेरी की हुई एक गलती की माफी मॉग लोगे।

उसके बाद तुम यह घर खरीद लेना और मेरी बेटी से शादी कर लेना। फिर तुम ज़िन्दगी भर खुश और अमीर रहना।"

सबेरे वह नौजवान फिर आया और लौरैन्स से पूछा कि क्या उसने वहॉ रात में कुछ देखा था?

इस बार लौरेन्स बोला — "हॉ, देखा था और यह पक्की बात है कि इसमें हमेशा ही भूत रहेगा। पर दुनियॉ की कोई भी चीज़ मुझे किसी से भी नहीं डरा सकती। मैं यह घर और इसके चारों तरफ की जमीन खरीदना चाहता हूॅ।"

नौजवान बोला — "मैं यह घर तो तुम्हें मुफ्त दे दूॅगा पर इसके चारों तरफ की जमीन तुम्हें एक हजार पौंड से कम में नहीं दूॅगा और मुझे विश्वास है कि तुम्हारे पास इतने पैसे होंगे नहीं।"

लौरैन्स बोला — "मेरे पास इतना सारा पैसा है जिसका तुम्हें अन्दाजा भी नहीं है। मुझे मंजूर है।"

जब उस नौजवान को यह पता चला कि लौरैन्स इतना ज़्यादा अमीर है तो उसने लौरैन्स को अपने घर खाने की दावत दी। लौरेन्स उसके घर गया। वहॉ जब उस बूढ़े की लड़की ने उसको देखा तो वह उस पर मोहित हो गयी।

लौरेन्स फिर मैरी के घर गया। वहॉ उसने उसे बीस पौंड दिये और उस बूढ़े की गलती के लिये माफी मॉगी।

फिर उसने उस नौजवान की बहिन के साथ शादी कर ली और खुशी खुशी रहने लगा। जितने दिन भी वह ज़िन्दा रहा कभी किसी से डरा नहीं।

3 छोटा निडर जौन[9]

भूतों की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि इटली के एक शहर में एक बहुत ही निडर लड़का रहता था। उसका नाम था जौन। वह किसी से नहीं डरता था इसलिये सब उसको छोटा निडर जौन कह कर बुलाते थे।

एक बार उसको दुनियॉ देखने की इच्छा हुई तो उसने कुछ पैसे लिये और दुनियॉ देखने निकल पड़ा। चलते चलते वह एक सराय में आया और वहॉ आ कर उसने सराय के मालिक से खाना और रात भर रहने के लिये की जगह मॉगी।

सराय का मालिक बोला — "आज तो पूरी सराय भरी हुई है। कोई जगह खाली नहीं है पर अगर तुमको डर न लगे तो मैं तुम्हें एक जगह ऐसी बता सकता हूॅ जहॉ तुम आराम से ठहर सकते हो।"

छोटा निडर जौन बोला — "नहीं नहीं, मुझे डर नहीं लगता। मैं क्यों डरूॅगा? तुम मुझे जगह बताओ।"

सराय का मालिक बोला — "लोग तो उस महल के बारे में सुन कर ही कॉप जाते हैं क्योंकि वहॉ अभी तक जो भी गया वहॉ से

[9] Dauntless Little John – a folktale from Italy, Europe.
Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. 1956. Translated by George Martin in 1980.

ज़िन्दा वापस लौट कर नहीं आया। जो वहॉ बड़ी बहादुरी से रात गुजारने जाते हैं सुबह को वहॉ फ्रायर्स[10] केवल उस आदमी की लाश लाने के लिये ही जाते हैं।"

जौन बोला — "कोई बात नहीं, मैं वहॉ जाऊॅगा। तुम मुझे बस वह जगह बता दो कि वह जगह है कहॉ।"

सराय के मालिक ने उसको वह जगह बता दी और उसको एक लैम्प दे दिया। जौन ने उससे लैम्प लिया, पीने के लिये एक बोतल शराब ली और खाने के लिये एक सौसेज[11] लिया और सीधा उस महल की तरफ चल दिया।

आधी रात को वह अपना खाना खाने के लिये खाने की मेज पर बैठा कि तभी उसने चिमनी से आती हुई एक आवाज सुनी — "क्या मैं इसे नीचे फेंक दूॅ?"

जौन लापरवाही से बोला — "हॉ हॉ फेंक दो।"

तभी चिमनी में से अॅगीठी के ऊपर एक आदमी की टॉग आ गिरी। जौन ने एक गिलास शराब पी। कुछ पल बाद वही आवाज फिर बोली — "क्या मैं इसे नीचे फेंक दूॅ?"

---

[10] Friars are the men of mendicant Christian religious order. They are different from monks as they take vow to live in poverty, chastity and obedience in service to society, rather for ascetism and devotion whereas monks live in self-sufficient community and work in a small area. Friars work among lay people of larger areas and subsist on donations and charity thus they roam around."

[11] Sausage is usually made from ground meat with a skin around it – traditionally made in a casing of intestine. See its picture above.

जौन ने फिर उसी लापरवाही से जवाब दिया — "हॉ हॉ फेंक दो।" और एक और टॉग चिमनी में से अॅगीठी के ऊपर आ गिरी।

इसी तरह से वह आवाज पूछती रही और जौन उसको उसी लापरवाही से कहता रहा — "हॉ हॉ फेंक दो।"

आखिर वहॉ दो टॉगें और दो हाथ आ कर गिर गये और फिर एक धड़। जैसे ही वह धड़ नीचे आ कर गिरा दोनों बॉहें और दोनों टॉगें उस धड़ से जुड़ गयीं और वहॉ एक बिना सिर वाला आदमी उठ कर खड़ा हो गया।

फिर एक और आवाज आयी — "क्या मैं इसे भी नीचे फेंक दूँ?" और जौन ने उसको फिर उसी लापरवाही से जवाब दिया — "हॉ हॉ इसे भी फेंक दो, तुमसे कहा न।"

फिर एक सिर नीचे आ गिरा। नीचे गिर कर वह सिर कूदा और उस बिना सिर वाले धड़ पर जा कर लग गया। वह तो अब सचमुच में ही एक बहुत बड़े साइज़ का आदमी[12] बन गया था।

जौन ने उसकी तरफ अपना शराब का गिलास उठा कर कहा — "तुम्हारी तन्दुरुस्ती के लिये।" और वह गिलास उसने एक ही सॉस में खाली कर दिया।

वह बड़े साइज़ का आदमी बोला — "अपना लैम्प उठाओ और मेरे साथ आओ।"

[12] Translated for the word "Giant"

जौन ने अपना लैम्प तो उठाया पर वह वहॉ से हिला नहीं। इस पर वह आदमी बोला — "तुम आगे चलो।"

जौन बोला — "नहीं तुम आगे चलो।"

आदमी चिल्लाया — "मैं कहता हूॅ कि तुम आगे चलो।"

जौन भी चिल्ला पड़ा — "तुम आगे चल कर मुझे रास्ता दिखाओ तभी तो मैं चलूॅगा।"

इस पर वह बड़े साइज़ का आदमी आगे आगे चल दिया और जौन रास्ते पर रोशनी दिखाता हुआ उसके पीछे पीछे चल दिया।

वे लोग उस महल के कमरों पर कमरे पार करते चले गये। इस तरह उन दोनों ने करीब करीब पूरा महल पार कर लिया। आखीर में जा कर उनको नीचे जाने के लिये एक सीढ़ी मिली। वे लोग उस सीढ़ी से नीचे उतर गये। सीढ़ी के आखीर में एक दरवाजा था।

आदमी ने जौन से कहा — "इसे खोलो।"

जौन बोला — "तुम खोलो।"

सो उस आदमी ने अपने कन्धे के धक्के से वह दरवाजा खोला तो उसके अन्दर भी नीचे जाने के लिये एक घुमावदार सीढ़ियॉ थीं। वह आदमी बोला — "चलो नीचे चलो।"

जौन फिर बोला — "तुम आगे चलो।"

सो वह आदमी फिर आगे आगे चला और जौन उसके पीछे पीछे चला।

सीढ़ियॉ उतर कर वे दोनों एक तहखाने में आ गये। उस तहखाने में पत्थर का एक टुकड़ा रखा था। आदमी ने कहा — "इसे उठाओ।"

जौन बोला — "यह कोई छोटा सा पत्थर नहीं है जिसको मैं उठा सकूँ। तुम उठाओ।"

उस आदमी ने उस बड़े से पत्थर को ऐसे उठा लिया जैसे वह कोई बड़ा सा पत्थर न हो कर पत्थर की गोली हो। उस पत्थर के नीचे सोने से भरे तीन बर्तन रखे थे।

वह आदमी बोला — "इन बर्तनों को ऊपर ले चलो।"

जौन बोला — "तुम ले कर चलो।"

उस आदमी ने एक एक कर के वे तीनों बर्तन उठाये और उनको ऊपर ले गया। फिर वे दोनों उन तीनों बर्तनों को ले कर उसी कमरे में आ गये जिसमें अॅगीठी लगी हुई थी।

वह आदमी बोला — "ओ छोटे जौन, अब इसका जादू टूट गया।" यह कहने के बाद उस आदमी की पहले एक टॉग निकली और चिमनी से उड़ कर बाहर चली गयी।

वह बोला — "इसमें से एक बर्तन तुम्हारा है।" फिर उसकी एक बॉह निकली और वह भी चिमनी से हो कर ऊपर चली गयी।

वह फिर बोला — "यह दूसरा बर्तन उन फ़ायर्स का है जो यह सोचते हुए कल सुबह तुम्हारे मरे हुए शरीर को लेने आयेंगे कि तुम

मर गये।" यह कहने के बाद उसकी दूसरी बॉह भी चिमनी से उड़ कर ऊपर चली गयी।

वह फिर बोला — "यह तीसरा बर्तन उस गरीब आदमी का है जो सबसे पहले यहॉ आयेगा।" इतना कहने के बाद उसकी दूसरी टॉग भी उड़ गयी और अब वह आदमी अपने धड़ पर बैठा रह गया।

वह फिर बोला — "यह महल तुम्हारा है तुम इसमें आराम से रहो।" यह कहने के बाद उसका धड़ भी उसके सिर से अलग हो कर चला गया।

अब केवल उसका सिर ही वहॉ रह गया। वह फिर बोला — "इस महल के मालिक और उनके बच्चे यहॉ से हमेशा के लिये चले गये हैं।" यह कह कर वह सिर भी चिमनी से हो कर बाहर निकल गया।

जब सुबह हुई तो बाहर शोर मचा। फ़ायर लोग यह सोच कर कि जौन तो अब तक मर गया होगा उसके मरे हुए शरीर को रखने के लिये एक ताबूत[13] ले कर आये थे पर वहॉ तो उन्होंने जौन को खिड़की पर खड़े हो कर अपना पाइप पीते देखा तो वे तो आश्चर्य में पड़ गये।

[13] Translated for the word "Coffin". See its picture above.

जौन ने उनको अपनी सारी कहानी सुना दी और उनको उनका सोने से भरा बर्तन दे दिया। इस तरह जो फ़ायर्स जौन की लाश ले जाने आये थे वे सोने से भरा बर्तन पा कर बहुत खुश हुए।

सोने से भरा वह तीसरा बर्तन भी उस गरीब आदमी को दे दिया गया जो वहॉ सबसे पहले आया।

जौन उस महल में बहुत साल तक रहा और उस सोने को इस्तेमाल करता रहा। पर एक दिन उसने अपने पीछे देख लिया तो उसको अपनी परछॉई दिखायी दे गयी। उसको देख कर वह इतना डर गया कि वहीं मर गया।

4 शापित रानी का महल[14]

भूतों की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश में कही सुनी जाती है।

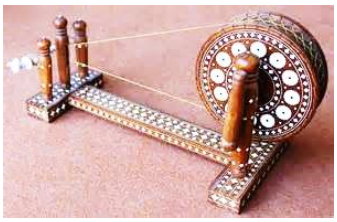

यह बहुत पुरानी बात है कि इटली के एक शहर में एक बूढ़ी विधवा रहती थी। जो सूत कात कर अपना गुजारा करती थी।

उसके तीन बेटियॉ थीं। वे भी सूत कातती थीं। हालॉकि वे तीनों रात दिन अपने अपने चरखों पर लगी रहती फिर भी वे एक सैन्ट भी नहीं बचा पाती थीं क्योंकि उस कताई से वे केवल उतना ही कमा पाती थीं जिससे उनका रोज का खर्चा चल जाये।

एक दिन वह बुढ़िया बहुत बीमार हो गयी। उसको बहुत तेज़ बुखार आ गया और तीन दिन बाद तो वह बस मरने वाली ही हो गयी।

उसने अपनी तीनों रोती हुई बेटियों को बुलाया और कहा — "बेटी रोओ नहीं। कोई यहॉ हमेशा के लिये नहीं रहता। मैं तो काफी दिन ज़िन्दा रह कर अपनी काफी ज़िन्दगी जी चुकी। अब मेरा मरने का समय आ गया है।

---

[14] The Palace of the Doomed Queen – a folktale from Siena area, Italy, Europe.
Adapted from the book, "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980. Its most stories are available in Hindi are available from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.

मेरा दिल तो केवल इसलिये रोता है कि मैं तुम लोगों को इतना गरीब छोड़ कर जा रही हूँ। पर मुझे इस बात की खुशी है कि क्योंकि तुम लोग अपनी कमाई करना जानती हो इसलिये तुम लोग किसी तरह से अपने आपको सँभाल लोगी। कम से कम भूखी नहीं मरोगी। मैं भगवान से प्रार्थना करूँगी कि वह तुम्हारी सहायता करे।

जो कुछ दहेज में मैं तुम्हारे लिये छोड़ कर जा रही हूँ वह हैं ये तीन रुई के गोले। वे तीनों गोले आलमारी में रखे हैं।" यह कह कर उसने अपनी आखिरी साँस ली और इस दुनियाँ से चली गयी।

कुछ दिनों बाद वे तीनों लड़कियाँ आपस में बात कर रही थीं — "इस रविवार को ईस्टर रविवार है और हमारे पास एक अच्छे ईस्टर खाने के लिये कुछ भी नहीं है।"[15]

सो सबसे बड़ी वाली लड़की मैरी[16] बोली — "मैं अपने धागे का गोला बेच दूँगी और उसके आये पैसे से ईस्टर के लिये खाना खरीदूँगी।"

ईस्टर की सुबह उसने अपने धागे का गोला उठाया और उसको बेचने के लिये बाजार चल दी। उसके हाथ का कता हुआ धागा बहुत बढ़िया था सो वह बहुत अच्छे दामों में बिक गया। उस पैसे से उसने डबल रोटी, बकरे की एक टाँग और एक बोतल शराब खरीदी और घर की तरफ चल दी।

[15] Easter Sunday – the day Jesus was resurrected after his crucifixion on Friday (Good Friday),

[16] Mary – name of the eldest girl

जब वह घर आ रही थी तो एक कुत्ता उसके पीछे दौड़ पड़ा। उसने उसके हाथ में लगी वह बकरे की टॉग और डबल रोटी तो मुँह में दबोच ली और शराब की बोतल नीचे गिरा दी।

नीचे गिरते ही वह बोतल तो टूट गयी और बकरे की टॉग और डबल रोटी ले कर वह कुत्ता वहॉ से भाग गया। वह लड़की तो डर के मारे हक्का बक्का सी रह गयी। वह तुरन्त ही वहॉ से घर भाग गयी।

जब वह घर आयी तो उसने अपनी बहिनों को बताया कि उस दिन उसके साथ क्या हुआ था। सो उस दिन उनको ब्राउन डबल रोटी के कुछ टुकड़े खा कर ही सन्तुष्ट रह जाना पड़ा।

अगले दिन बीच वाली लड़की रोज़[17] बोली — "आज मैं देखती हूँ कि वह कुत्ता कैसे परेशान करता है?" सो उस दिन वह अपना सूत ले कर बाजार गयी।

उसका सूत भी अच्छा कता हुआ था सो उसको भी अपने सूत के बहुत अच्छे पैसे मिले। उसने भी अपने पैसों से बकरे का कुछ मॉस, डबल रोटी और शराब की एक बोतल खरीदी और घर की तरफ चल दी।

इस लड़की ने मैरी के रास्ते को छोड़ कर अपने घर के लिये एक दूसरा ही रास्ता लिया। पर वह कुत्ता तो इस रास्ते पर भी उसके पीछे भागा। उसने इस लड़की का भी बकरे का मॉस और

[17] Rose – the name of the middle girl

डबल रोटी अपने मुँह में दबा ली और शराब की बोतल नीचे गिरा कर तोड़ दी और मॉस और डबल रोटी ले कर भाग गया।

रोज़ मैरी से ज़्यादा हिम्मत वाली थी सो वह उस कुत्ते के पीछे भागी पर वह कुत्ता तो उससे कहीं तेज़ भाग रहा था सो वह उसका पीछा बहुत देर तक नहीं कर सकी और कुछ ही देर में थक कर वापस घर आ गयी। उसने भी हॉफते हॉफते अपनी बहिनों को बताया कि उस दिन उसके साथ क्या हुआ था।

उस दिन भी उन लोगों को ब्राउन डबल रोटी ही खानी पड़ी। उस दिन सबसे छोटी लड़की नीना[18] बोली — "कल मेरी बारी है। कल मैं जाऊँगी और देखती हूँ कि वह कुत्ता मेरे साथ भी ऐसा ही करता है क्या।"

सो अगली सुबह नीना ने अपने सूत का गोला लिया और अपनी दोनों बहिनों के जाने के समय से बहुत पहले ही घर से बाजार के लिये निकल पड़ी।

वहॉ उसने भी अपना सूत बहुत अच्छे दामों पर बेचा और बहुत सारा खाने का सामान खरीदा और एक तीसरे रास्ते से घर की तरफ चल दी।

कुछ दूर चलने के बाद उसके पीछे भी एक कुत्ता आया। उसने भी नीना के हाथ में लगी शराब की बोतल गिरा कर तोड़ दी और बाकी का सामान ले कर भाग गया।

[18] Nina – the name of the youngest girl

नीना उसके पीछे पीछे भागी और भागती ही रही। भागते भागते वह एक महल के पास आ गयी जहॉ आ कर वह कुत्ता गायब हो गया।

उसने सोचा कि अगर मुझे कोई इस महल के अन्दर मिलता है तो मैं उसको बताऊॅगी कि एक कुत्ता तीन दिन से हमारा खाना ले कर भाग रहा है और फिर मैं उससे अपने खाने का बदला लूॅगी।

यह सोच कर वह उस महल में अन्दर घुसी और उसके रसोईघर तक आ पहुॅची। वहॉ आग जल रही थी और बर्तनों में खाना पकाया जा रहा था।

एक जगह बकरे की टॉग भूनी जा रही थी। नीना ने एक बर्तन का ढकना उठा कर उस बर्तन में झॉका तो उसने देखा कि उसमें तो वही मॉस पक रहा था जो उसने अभी थोड़ी देर पहले ही खरीदा था और दूसरे बर्तन में बकरे का मॉस था।

फिर उसने रसोईघर की एक आलमारी खोली तो देखा कि उसमें तीन डबल रोटियॉ रखी हुई थीं।

फिर वह महल देखने चली गयी। वह सारे महल में घूम ली पर आश्चर्य की बात कि उसको उस महल में एक भी आदमी दिखायी नहीं दिया। पर वहॉ खाने के कमरे में एक मेज पर तीन आदमियों के लिये खाना लगा था।

नीना ने अपने मन में सोचा "लगता है कि यह खाना तो केवल हमारे लिये ही लगा है और वह भी हमारे ही खरीदे हुए खाने से।

अगर मेरी बहिनें यहॉ होतीं तो मैं यहॉ अभी अभी खाना खाने बैठ जाती पर अब मैं क्या करूँ।"

उसी समय उसने सड़क पर जाती हुई एक गाड़ी की आवाज सुनी तो उसने खिड़की से बाहर देखा। उसने उस गाड़ी चलाने वाले को पहचान लिया।

उसने उस गाड़ीवान से कहा कि वह उसकी बहिनों से जा कर कह दे कि उनकी छोटी बहिन नीना यहॉ महल में उनका इन्तजार कर रही थी। उनके लिये यहॉ बहुत बढ़िया खाना लगा रखा है। सो वे तुरन्त ही यहॉ चली आयें।

उस गाड़ीवान ने उसकी बहिनों को जा कर नीना का सन्देश दिया तो वे दोनों वहीं आ गयीं। नीना ने उन दोनों को बताया कि उसके साथ क्या क्या हुआ।

फिर वह बोली — "चलो खाना खाते हैं। अगर इस घर के मालिक आ जाते हैं तो हम उनसे कह देंगे कि हम तो केवल अपना ही खाना खा रहे हैं।"

उसकी बहिनें उतनी बहादुर तो नहीं थीं जितनी नीना थी पर इस समय तक उनको भी भूख लग आयी थी सो वे सब वहॉ उस मेज पर खाना खाने बैठ गयीं।

अभी वे मेज पर बैठी ही थीं कि लड़कियों ने देखा कि अचानक बाहर अँधेरा हो आया था। उस महल की खिड़कियॉ बन्द होने लगीं और उसमें लगे लैम्प जलने लगे। वे अभी उनकी तारीफ ही कर

रही थीं कि उनका खाना अपने आप आ गया और मेज पर लग गया।

नीना ने खाना खाने से पहले प्रार्थना की — "जो भी हमें हमारा यह खाना परस रहा है और जिसने हमें खाना बनाने से बचाया हम उसका धन्यवाद करते हैं।"

फिर वह अपनी बहिनों से बोली "आओ बहिनों खाना शुरू करते हैं।" और उन्होंने बकरे की टॉग खानी शुरू कर दी।

नीना की बहिनें तो डर के मारे सुन्न सी हो गयी थीं। वे बड़ी मुश्किल से खाना खा पा रही थीं और वे सारी शाम एक दूसरे को ही देखती रहीं क्योंकि उनको लग रहा था कि वहॉ कभी भी कहीं से भी कोई भी बड़ा सा राक्षस आ सकता था।

पर नीना बोली — "अगर वे हमको यहॉ खाना खिलाना नहीं चाहते थे तो वे हमारे लिये न तो खाना पकाते, न हमें खाना परसते और न ही हमारे लिये लैम्प जलाते।" पर उसकी बहिनें उसके इस विचार से राजी नहीं थीं।

खाना खाने के बाद जल्दी ही उनको नींद आने लगी तो नीना उनको महल में ले गयी। वहॉ वे सब एक ऐसे कमरे में आ गयीं जहॉ तीन बिस्तर लगे हुए थे सो नीना बोली "चलो सोया जाये।"

उसकी बहिनें बोलीं — "नहीं नहीं। हम लोगों को अपने घर चलना चाहिये। यहॉ तो हमको बहुत डर लग रहा है।"

नीना ने हॅस कर कहा — "तुम लोग तो बहुत ही डरपोक हो। देखो न हम लोग यहॉ कितने आनन्द से हैं और तुम लोग यहॉ से जाना चाहती हो। मैं तो सोने जा रही हूॅ तुमको अगर आना हो तो तुम भी आ जाना।"

वह उनको दोबारा सोने के लिये कहने ही वाली ही थी कि उन्होंने सीढ़ी के नीचे से एक आवाज सुनी — "नीना, मुझे ज़रा रोशनी तो दिखाना।"

यह सुन कर नीना की बहिनें तो डर के मारे जम सी गयीं — "हे भगवान हम पर दया करो। यह कौन हो सकता है? नीना, मत जाना वहॉ। पता नहीं कौन है वहॉ।"

नीना बोली — "मैं तो जाऊॅगी।"

कह कर उसने एक लैम्प उठाया और सीढ़ियों से नीचे की तरफ जाने लगी। वह नीचे उतरी तो एक कमरे में आ गयी जिसमें एक रानी एक कुर्सी पर जंजीरों से बॅधी बैठी थी। उसके मुॅह कान और नाक से लपटें निकल रही थीं।

रानी उन लपटों के बीच में से ही बोली — "सुनो नीना, क्या तुम अपनी किस्मत बनाना चाहोगी?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं।"

"तब तुमको अपनी बहिनों की सहायता लेनी पड़ेगी।"

"मैं उनको बता दूॅगी।"

रानी फिर बोली — "तुम लोगों को कुछ अजीब अजीब चीज़ें करनी पड़ेंगी और ध्यान रखना कि अगर तुम डर गयीं तो तुम मर जाओगी।"

नीना बोली — "मैं उनको वैसे कामों को करने के लिये किसी तरह से मना लूँगी जो उनको करने के लिये जरूरी होंगे।"

रानी फिर वोली — "बहुत अच्छे। तो देखो, वे तीन बक्से खोलो। उन सब में रानियों वाले कपड़े और गहने रखे हैं। मैं एक बार शहर के एक नौजवान से प्रेम करने लगी थी और उसी की वजह से मैं आज इस नरक में हूँ।

उसने जो भी कुछ मेरे साथ किया गलत किया। वह किसी दूसरी लड़की से शादी करना चाहता था। अब मैं यह चाहती हूँ कि वह भी मेरे साथ इस नरक को सहे। उसके साथ न्याय करने का यही एक तरीका है।

तुम कल मेरे कपड़े पहनना। अपने बाल भी वैसे ही बनाना जैसे मेरे बने हैं और हाथ में एक किताब ले कर बाहर छज्जे की दीवार के सहारे झुक कर खड़ी हो जाना।

एक निश्चित समय पर वह नौजवान यहाँ आयेगा और तुमसे पूछेगा — "मैम, क्या में आपके पास आ सकता हूँ?" तो तुम उसका जवाब देना "हाँ।"

और तब तुम उसको कौफी के लिये बुलाना और उसको जहर मिली कौफी का यह प्याला दे देना। जब वह मर जाये तो उसको

यहॉ नीचे ले आना। फिर यह आलमारी खोलना और उसको इस आलमारी के अन्दर फेंक देना। और फिर उसके चारों तरफ चार मोमबत्ती जला देना।

मैं बहुत अमीर थी। यह मेरी चीज़ों की लिस्ट है जिनको तुम मेरे नौकरों से ले सकती हो जो आज कल मेरी हर चीज़ चुराने पर लगे हैं।"

यह सुन कर नीना सीढ़ियों से ऊपर गयी और अपनी बहिनों को जा कर सब कुछ बताया कि उसने सीढ़ियों के नीचे क्या क्या देखा और बोली — "तुम लोग कसम खाओ कि तुम मेरी सहायता करोगी नहीं तो फिर भगवान ही तुम्हारी सहायता करे।"

उसकी दोनों बहिनों ने वायदा किया कि वे उसकी सहायता जरूर करेंगी।

अगली सुबह नीना उस मरी हुई रानी की तरह तैयार हुई और वहॉ जैसे रानी ने बताया था हाथ में किताब ले कर छज्जे की दीवार के सहारे झुक कर खड़ी हो गयी।

जल्दी ही उसको घोड़े की टापों की आवाज सुनायी पड़ी और एक नौजवान घोड़े पर सवार वहॉ आया। उसने नीना की तरफ देख कर उसको नमस्ते की। नीना ने भी अपना सिर हिला कर उसकी नमस्ते का जवाब दिया।

उस नौजवान ने पूछा — "क्या मैं आपके पास आ सकता हूॅ मैम?"

नीना बोली — "यकीनन।"

वह नौजवान अपने घोड़े पर से उतरा और महल की सीढ़ियॉ चढ़ कर ऊपर आ गया।

नीना ने कहा — "चलो, हम लोग साथ बैठ कर कौफी पीते हैं।"

वह नौजवान बोला — "खुशी से।"

नीना ने उसको एक प्याले में जहरीली कौफी डाल कर दे दी। वह नौजवान उस कौफी को पीते ही मर गया। नीना ने फिर अपनी दोनों बहिनों को बुलाया और उनसे कहा कि वह उसके शरीर को नीचे ले जाने में उसकी सहायता करें पर उन्होंने मना कर दिया।

नीना बोली — "अगर तुम लोगों ने मेरी सहायता नहीं की तो मैं तुम लोगों को यहीं मार दूॅगी।"

इस पर वे डर गयीं और उस नौजवान के शरीर को नीचे ले जाने में नीना की सहायता करने में लग गयीं। नीना ने उस नौजवान का सिर पकड़ा और उसकी बहिनों ने उसके पैर और तीनों उसको खींचते हुए नीचे आलमारी के पास ले गयीं। उस आलमारी के चारों तरफ चार मोमबत्ती लगी हुई थीं।

उसकी बहिनें तो यह सब देख कर कॉपने लगीं और उस नौजवान के शरीर को वहीं छोड़ कर भागने ही वाली थीं कि नीना बोली — "तुम भाग कर तो देखो। फिर तुम देखना कि मैं तुम्हारे साथ क्या करती हूॅ।"

उसके बाद उसकी बहिनों की वहॉ से भागने की हिम्मत ही नहीं पड़ी।

नीना ने वह आलमारी खोली तो उसमें वह आग की लपट वाली रानी एक सोने के सिंहासन पर बैठी थी। उन्होंने उसके प्रेमी को उसके पास ही रख दिया।

रानी ने भी उसको हाथ से पकड़ कर अपने पास बिठा लिया और बोली — "आओ मेरे पास नरक में आओ, ओ नीच आदमी। अब तुम मुझे छोड़ कर कहीं नहीं जा सकोगे।"

इसके साथ ही वह आलमारी एक बहुत ज़ोर की आवाज के साथ झटके से बन्द हो गयी और गायब हो गयी।

यह सब देख कर नीना की बहिनें तो डर के मारे बेहोश सी हो गयीं। नीना उनको किसी तरह होश में लायी और उनको उस घटना के धक्के से बाहर निकाला।

फिर उन्होंने उस रानी का खजाना नौकरों से लिया और वे दुनियॉ की सबसे ज़्यादा अमीर लड़कियॉ हो गयीं।

कुछ साल बाद नीना की दोनों बहिनों की शादी हो गयी और उसने उनकी शादी में इतना अच्छा दहेज दिया जैसे किसी राजकुमारी की शादी में दिया जाता है। बाद में उसकी अपनी भी शादी हो गयी और वह भी एक रानी की तरह रही।

5 पानी का भूत और मछियारा[19]

दुनियॉ में भूतों की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के चीन देश की लोक कथाओं से ली है।

पानी के भूत चीन में हर नदी और समुद्र में रहते हैं। वे भूत उन बदकिस्मत आदमियों, मछियारों और मल्लाहों की आत्माऐं हैं जो या तो नदी या समुद्र में डूब गये थे या फिर उनके सबसे गहरे और काले पानी की तली में चले गये थे।

वे वहॉ तब तक रहते थे जब तक कि उनको कोई दूसरा आदमी ऐसा न मिल जाये जो वहॉ उनकी जगह ले ले।

जब किसी आदमी को या तो वे खुद मार लेते थे या फिर उनको खुद ही मरा हुआ कोई आदमी मिल जाता था तो वे भूत उस आदमी की जगह आदमी के रूप में पैदा हो जाते थे।

कुछ पानी के भूत किस्मत वाले होते थे क्योंकि उनके समुद्र इतने तूफानी और खतरनाक होते थे कि वहॉ लोग मरते ही रहते थे और इस तरह से वे भूत फिर से आदमी के रूप में पैदा होते ही रहते थे।

उनका यह नियम था कि जैसे ही कोई पानी का भूत किसी आदमी को मारता था और उसको पानी की तली में ले जाता था वह

[19] The Water Ghost and the Fisherman – a folktale from China, Asia. Adapted from the book: "Chinese Myths and Legends", translated by Kwok Man Ho. 2011. Its Hindi translation may be obtained from hindifolktales@gmail.com as e-book free of charge.

भूत फिर से एक नयी आत्मा के साथ आदमी के रूप में पैदा हो सकता था।

ऐसा ही पानी का एक भूत हुंग माओ पी[20] गॉव के पास से बहती हुई नदी के पानी में रहता था। वह वहॉ बहुत ही अकेला महसूस करता था। जहॉ तक उसको याद पड़ता था वह वहॉ का अकेला ही भूत था।

पर वह गॉव इतना छोटा था कि वहॉ के बहुत कम लोग उस नदी पर जाते थे। और जब भी वे जाते थे तो वह भूत हमेशा ही उनको खींच कर डुबोने का मौका खो देता था इसलिये वह कभी आदमी बन कर पैदा ही नहीं हो पा रहा था।

कई सालों से वह भूत फुंग ही[21] को डुबोने का प्लान बना रहा था। फुंग ही उस गॉव का एक बहुत ही होशियार और हॅसमुख मछियारा था और वह उस भूत के क्षेत्र में से हफ्ते में कम से कम चार बार तो गुजरता ही था।

पानी के उस भूत ने कई बार पानी में तूफान उठाये, उस मछियारे का जाल फाड़ दिया, उसकी नाव में छेद कर दिया पर फुंग मछियारा ही बहुत ही होशियार था और वह भूत उसको किसी भी तरह पकड़ नहीं पा रहा था।

[20] Hung Mao Pei – name of the Ghost
[21] Fung Hei – name of the fisherman

एक दिन उसने उस मछियारे के जाल के आस पास की मछलियों को हटाने में दस घंटे खर्च किये ताकि वह उस मछियारे को रात को मछली पकड़ने पर मजबूर कर सके।

जैसे ही चॉद घने बादलों के पीछे छिपा पानी का भूत फुंग ही की नाव पर चढ़ गया और उसके किनारे के पास एक अॅधेरे कोने में जा कर छिप कर बैठ गया। वहॉ बैठ कर वह उस मछियारे को मारने के समय का इन्तजार करने लगा।

उस समय फुंग ही चुपचाप पानी की तरफ देख रहा था। पानी के भूत ने सुना कि वह चुपचाप भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि वह उसको कम से कम कुछ मछलियॉ दे दे चाहे वह उसको थोड़ी सी ही मछलियॉ ही क्यों न दे पर दे दे।

फिर उस पानी के भूत ने देखा कि फुंग ही ने अपने लकड़ी के कटोरे में से अपने आखिरी चावल खा कर खत्म किये।

आखीर में पानी के भूत ने उसको पकड़ने की उम्मीद छोड़ दी और वह वहॉ से जाने ही वाला था कि तभी उसने देखा कि उसी समय वह मछियारा नदी में से अपना जाल समेटने के लिये अपनी नाव के एक तरफ को झुका।

बस उस भूत को मौका मिल गया और उसने फुंग ही को काले और अॅधेरे पानी में धक्का दे दिया।

दो मिनट तो फुंग ही पानी के भूत की पकड़ से लड़ा पर फिर बेहोश हो गया। यह देख कर पानी का भूत बहुत खुश हुआ।

उसको लगा कि वह मछियारा मर गया और वह खुशी खुशी उस मछियारे के शरीर को नदी के किनारे खींच लाया।

वहॉ उसने नदी की कीचड़ उसके चेहरे पर मली और भूत की एक गोली उसकी जबान पर रख दी। उस मछियारे के शरीर को भूतों की दुनियॉ में ले जाने के लिये तैयार करने के बाद वह भूत अपने इस कारनामे को समुद्र के बादशाह येन लो वान[22] को बताने के लिये वहॉ से जितनी तेज़ी से उड़ सकता था उड़ गया।

पर पानी के भूत ने अपनी कामयाबी का ज़रा ज़्यादा जल्दी ही अन्दाज लगा लिया क्योंकि वह मछियारा अभी मरा नहीं था वह तो अभी केवल बेहोश ही हुआ था। अपनी कामयाबी की खुशी में उत्सुक पानी के भूत को उसके दिल की धीमी धीमी धड़कन सुनायी ही नहीं दी।

वह मछियारा कुछ देर तक वहीं नदी के किनारे बिना हिले डुले पड़ा रहा और यह देखता रहा कि पानी का भूत वहॉ से गायब हो गया कि नहीं।

यह पक्का करने के बाद कि वह पानी का भूत वहॉ से चला गया उसने वह भूत की गोली अपने मुँह में से निकाल कर अपनी जेब में रख ली, अपने चेहरे की कीचड़ नदी के पानी से साफ की और अपने घर भाग गया। घर जा कर उसने अपने घर का दरवाजा बन्द कर लिया और जा कर सो गया।

[22] Yen Lo Wan – the Emperor of the Sea

जब यह सब यहॉ धरती पर हो रहा था तो समुद्र का बादशाह येन लो वान उस पानी के भूत से उसके उस मछियारे के पकड़ने का हाल सुन रहा था।

मछियारे के पकड़ने का हाल सुना कर पानी का भूत अब समुद्र के बादशाह से प्रार्थना कर रहा था कि अब तो वह उसको आदमी के रूप में पैदा कर दे।

येन लो वान अपने शानदार सोने के सिंहासन से उठा, उसने पास में रखी मूँगे[23] की मेज पर से "जिन्दा और मुर्दा लोगों की किताब"[24] उठायी और उसके पन्ने पलट कर उस पन्ने पर गया जहॉ समुद्र में अभी अभी मरे हुए लोगों के नाम लिखे थे।

काफी देर तक इधर उधर देखने के बाद भी उसको उस किताब में उस मछियारे का नाम नहीं मिला जिसके मारने का जिक्र वह पानी का भूत कर रहा था।

---

[23] Coral – Coral is normally found in tropical seas throughout the world. It is basically a limestone formation or reefs. It comes in many colors. It gets its color from the algae it hosts. See its picture above.

[24] Book of the Living and Dead

यह देख कर येन लो वान ने पानी के उस भूत से पूछा — "क्या तुमको पूरा यकीन है कि वह मछियारा मर गया था?"

पानी का भूत परेशान सा ज़ोर से चिल्लाया — "हॉ मुझे पूरा यकीन है कि वह मछियारा मर गया था। धरती का कोई भी आदमी आपके पानी में तीन मिनट से ज़्यादा ज़िन्दा कैसे रह सकता है?"

समुद्र का बादशाह गरजा — "तुम्हें पता है कि यह तुम मेरे पास आज किसी मरे हुए की कहानी ले कर चौथी बार आये हो और आज फिर तुम बेवकूफ बन गये हो। वह मछियारा अभी मरा नहीं है। मेरे लिखने वाले इस किताब में नाम लिखने में गलती नहीं कर सकते।

जाओ जल्दी नदी में वापस चले जाओ और इससे पहले कि तुम हमेशा के लिये आदमी बन कर जीने का मौका खो बैठो उस आदमी के मुॅह में से वह भूत की गोली वापस निकाल लो।"

समुद्र के बादशाह ने अपने केंकड़ें[25] चौकीदारों को बुलवाया और उनसे कहा कि वे उस दुखी पानी के भूत को धरती तक वापस ले जायें ताकि वह उस मछियारे के मुॅह में से भूत वाली गोली निकाल सके।

राजा का हुक्म मान कर वे उसको धरती तक छोड़ आये।

वहॉ से वह पानी का भूत नदी के किनारे तक दौड़ा गया जहॉ उसने उस मछियारे के शरीर को छोड़ा था पर वहॉ तो केवल उसके

[25] Translated for the word "Crab". See its picture above.

शरीर का निशान ही मौजूद था और कुछ नहीं। मछियारा तो वहॉ से गायब हो चुका था।

बदकिस्मत पानी का भूत उस मछियारे को ढूँढने को लिये पागलों की तरह से गॉव का घर घर झॉकता रहा – कभी उन घरों की खिड़कियों में से तो कभी उन घरों में बनी झिरियों में से।

फिर कभी वह उनका दरवाजा खटखटाता और जैसे ही घर का मालिक दरवाजा खोलता तो उस मछियारे को न पा कर वह वहॉ से गायब हो जाता।

आधी रात से पहले पहले वह एक घंटे तक ऐसे ही उस मछियारे को ढूँढता रहा पर वह उसको कहीं नहीं मिला। आखीर में उसको उस मछियारे का लकड़ी का बना घर मिल ही गया।

वह उस मछियारे के घर का दरवाजा तब तक खटखटाता रहा जब तक कि वह अपने बिस्तर से उठ कर यह देखने पर मजबूर नहीं हो गया कि वहॉ क्या हो रहा था।

आधे सोते हुए मछियारे ने अपने दरवाजे को बहुत थोड़ा सा खोल कर उसमें से बाहर झॉका पर बाहर बहुत अँधेरा था इसलिये उसको कुछ दिखायी नहीं दिया।

उसने दरवाजा थोड़ा सा और खोला ताकि वह अपने घर के आगे बने छोटे से बरामदे को ठीक से देख सके। वहॉ उसने देखा कि लकड़ी के एक लट्ठे के सहारे खड़ा खड़ा पानी का भूत सिसक रहा था।

पानी के भूत ने सिसकते सिसकते ही मछियारे से प्रार्थना की — "मेरे मछियारे भाई, तुम कम से कम मुझे मेरी वह भूत की गोली तो वापस कर दो जो मैंने तुम्हारे मुँह में रखी थी नहीं तो मैं फिर कभी इस धरती पर नहीं आ पाऊँगा।"

मछियारे को उस भूत पर दया आ गयी। वह तुरन्त ही घर के अन्दर दौड़ गया और वह कीमती भूत की गोली ले कर वापस आ गया।

पर वह उस गोली को केवल इस शर्त पर लौटाने के लिये तैयार था कि वह भूत उसका मछली का जाल हमेशा ही मछलियों से भर दिया करेगा।

भूत को उसकी यह शर्त माननी पड़ी। मछियारे ने उस भूत की गोली उसको लौटा दी और वह भूत उससे वह गोली ले कर वहाँ से वापस चला गया।

उस दिन के बाद से तो उस मछियारे की मछलियों का शिकार दस गुना बढ़ गया। अब तो अक्सर ही उसकी नाव मछलियों से इतनी ज़्यादा भरी रहती कि उसको हमेशा ही यह लगता रहता कि वह नदी के किनारे तक सुरक्षित पहुँच भी पायेगा या नहीं।

पहले तो वह पानी का भूत जब मछलियाँ उस मछियारे की तरफ धकेलता तो वह पानी की सतह के ठीक नीचे ही रहता पर बाद में फिर वह मछियारे से बात करने के लिये पानी की सतह के ऊपर भी दिखायी देने लगा।

जल्दी ही दोनों अच्छे दोस्त बन गये। उनकी पहली मुलाकात के ठीक एक महीने के बाद एक दिन मछियारे ने पानी के भूत को अपने घर शाम के खाने के लिये बुलाया।

अब दोनों को एक दूसरे का साथ इतना अच्छा लगने लगा कि वे मछियारे के घर में खाना खाने के लिये हफ्ते में दो बार मिलने लगे।

एक दिन सुबह सुबह पानी का भूत मछियारे के घर आया और उसका हाथ पकड़ कर बोला — "मुझे तुम्हें यह बताते हुए बहुत अफसोस हो रहा है दोस्त पर अब मुझे तुम्हें छोड़ना पड़ेगा।"

मछियारा आश्चर्य से बोला — "क्यों? क्या हुआ?"

पानी का भूत खुश हो कर बोला — "आज शाम को एक बुढ़िया उस कीचड़ वाली नदी के किनारे आयेगी और अगर मैं वहाँ उसको एक हल्का सा भी धक्का दूँगा तो वह नदी के पानी में गिर जायेगी और गहरे पानी में डूब जायेगी।

यह मेरी किस्मत बदलने के लिये बहुत ही अच्छा मौका है। तुम मेरे बहुत ही अच्छे दोस्त रहे हो। मुझे तुमको छोड़ते हुए बहुत दुख हो रहा है पर मेरे पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं है।"

मछियारा चिल्लाया — "एक मिनट, एक मिनट। मुझे मालूम है कि तुम्हारे लिये इस आत्मा की दुनियाँ से बाहर निकलना कितना जरूरी है पर तुम एक भोली भाली बुढ़िया को इस तरह से नहीं मार सकते।

तुम उसको इतनी दर्दनाक मौत कैसे दे सकते हो और फिर मुझे मछली पकड़ने में कौन सहायता करेगा? तुम्हारे बिना तो मैं ज़िन्दा भी कैसे रहूँगा?"

कई महीनों से साथ साथ रहते पानी का भूत अब अपने नये दोस्त मछियारे की बहुत परवाह करने लग गया था सो वह मछियारे की मेज पर बैठ गया और इस समस्या का कुछ हल सोचने लगा। दोनों दोस्त बहुत देर तक चुपचाप बैठे रहे।

आखिर पानी का भूत मछियारे की बात मानता हुआ बोला — "ठीक है। मैं अपना यह काम तीन साल के लिये रोक देता हूँ।"

और इस वायदे के अनुसार तीन साल तक उस नदी में फिर कोई नहीं डूबा। वे दोनों रोज झील के किनारे मिलते, अक्सर मछियारे के घर साथ साथ खाना खाते और त्यौहारों पर तो अक्सर वह पानी का भूत मछियारे के घर में ही रह जाता।

पर फिर एक दिन ऐसा आया जब पानी के भूत ने एक तैराक को डुबोने का विचार किया और मछियारे के यह बात बतायी पर एक बार फिर उसको मछियारे की बात माननी पड़ी।

एक दिन वह पानी का भूत मछियारे से फिर बोला — "कल एक जवान लड़का नदी में तैरने जायेगा और मैं उसको नदी की तली में डुबो दूँगा। और सुन लो इस बार तुम मुझे नहीं रोकोगे क्योंकि मैं इस नदी में हमेशा के लिये नहीं रह सकता।"

इस बार मछियारा कुछ नहीं बोला। वह दुखी हो कर फर्श की तरफ देखता रहा और अपना सिर हिलाता रहा। पानी का भूत यह सब उससे कह कर वहॉ से चला गया।

अगले दिन मछियारा रोज की तरह से अपनी नाव ले कर नदी के बीच में गया।

जैसे ही वह अपना मछली पकड़ने वाला जाल नदी में डाल रहा था कि उसने एक लड़के को नदी किनारे रस्सी कूदते हुए देखा तो उसने अपना जाल तो छोड़ दिया और अपनी नाव की पतवार पकड़ कर उसे किनारे की तरफ ले चला जहॉ वह लड़का पानी में घुसने की कोशिश कर रहा था।

मछियारा वहीं से चिल्लाया — "ए लड़के, तुम अभी अभी अपने घर चले जाओ। तुम्हारी मॉ तुमको बुला रही है। अगर तुम अभी अभी घर नहीं गये तो वह तुमको आलसी होने के लिये बहुत मारेगी।"

लड़का यह सुन कर डर गया और अपने घर भाग गया। इधर मछियारा भी सन्तुष्ट हो कर अपना जाल देखने के लिये वापस लौट आया।

उस शाम को पानी का भूत जब मछियारे के घर आया तो बहुत नाराज था पर मछियारे को उसकी इस बात का पता था सो उसने

उसके शाम के खाने के लिये बहुत स्वाददार मछली और मॉस पका कर मेज पर सजा रखा था।

जैसे ही पानी का भूत उसके घर में घुसा तो मछियारे ने उससे माफी मॉगते हुए कहा — "मुझे मालूम है मेरे दोस्त कि तुम मुझसे गुस्सा हो पर ज़रा सोचो उस लड़के के आगे तो अभी पूरी ज़िन्दगी पड़ी है और तुम उसको अभी से मार देना चाहते थे।"

मछियारा आगे बोला — "देखो तुम मुझे इलजाम मत देना पर अब मैं तुम्हारे कामों में बिल्कुल भी दखल नहीं दूँगा।"

मछियारे के शब्दों से सन्तुष्ट होते हुए और खाने के लालच में वह पानी का भूत वहीं खाना खाने बैठ गया। इसके बाद यह मामला फिर हमेशा के लिये बन्द हो गया।

फिर कुछ साल बीत गये। दोनों की दोस्ती चलती रही। पर एक दिन फिर जब पानी का भूत मछियारे के घर खाना खा रहा था तो भूत का धीरज फिर से छूट गया और वह मछियारे से बोला कि अब उसके नदी छोड़ने का समय आ गया था।

बहुत ही भारी दिल से उसने मछियारे को अपना प्लान बताया।

वह बोला — "तुमको मालूम है कि मैं तुम्हारी बहुत परवाह करता हूँ पर ज़रा तुम अपनी ज़िन्दगी से मेरी इस भूतिया ज़िन्दगी की जो मैं नदी की तली में बिताता हूँ तुलना तो करो। जब तक मैं अपनी सहायता अपने आप नहीं करूँगा मैं हमेशा के लिये यहीं पड़ा रह जाऊँगा।

और जब तुम मर जाओगे तो मेरा इस दुनियॉ में कोई भी दोस्त नहीं रह जायेगा इसलिये मुझे अपने आपको बचाने के लिये कुछ न कुछ तो करना ही चाहिये।

मैंने सुना है कि तुम्हारी पड़ोसन चॉग शान[26] अपने पति से बहुत झगड़ा करती है। और मुझे ऐसा पता चला है कि कल वह नदी में डूब कर आत्महत्या करने वाली है।

इस तरह से इस बार मैं किसी को मार नहीं रहा बल्कि वह अपने आप ही मरने जा रही है। इसलिये इस बार तुम मुझको इलजाम नहीं दे सकते। और हॉ देखो मेरे इस काम में कोई रोक टोक भी मत लगाना।"

यह खबर सुन कर तो मछियारा सकते में आ गया। उसको तो इस बात का पता ही नहीं था। हालॉकि उसने पानी के भूत के मामलों में दखल न देने का वायदा किया था पर फिर भी उसने मन ही मन चॉग शान की सहायता करने का फैसला कर लिया।

उस रात मछियारे को रात भर नींद नहीं आयी। वह अपने आगे के प्लान के बारे में ही सोचता रहा कि उसे क्या करना है। सुबह उसने निश्चय किया कि वह अपनी दोस्ती को दॉव पर लगा कर भी उस स्त्री को बचायेगा।

[26] Chang Shan – the name of the fisherman's neighbor

मछियारा सुबह को नहाया भी नहीं, उसने कुछ खाया भी नहीं और अपने बालों में कंघी भी नहीं की। बस तुरन्त ही कपड़े पहन कर वह नदी की तरफ चल दिया।

वह बस समय से ही नदी पर पहुँच पाया क्योंकि चॉग शान तभी तभी नदी के भॅवर में कूदी थी। यह देख कर वह खुद भी उसके पीछे पीछे नदी में कूद गया।

भॅवर की तेज़ लहरें दोनों को नदी की तली की तरफ ले गयीं। मछियारे ने उस स्त्री को पकड़ तो लिया पर वह बेहोश हो गयी थी। फिर भी उसने उसको और खुद को बाहर निकालने में अपनी पूरी ताकत लगा दी।

पानी का भूत देखता रहा पर उसने दोनों को न तो बचाने की कोई कोशिश की और न ही मारने की कोशिश की। वह बस अपनी किस्मत का इन्तजार करता रहा। कुछ देर बाद मछियारा चॉग शान को बाहर ले कर आ गया और उसको उसके पति के पास छोड़ आया।

उस रात भूत ने मछियारे का दरवाजा खटखटाया। बिना किसी जवाब की उम्मीद के पानी का भूत अन्दर आया और रसोईघर की मेज पर बिना कुछ बोले बैठ गया।

मछियारे ने उसको अपनी कुछ सफाई देनी चाही पर पानी के भूत ने उसको कुछ भी कहने से पहले ही रोक दिया।

वह बोला — "मैं यहाँ तुमको कुछ कहने या तुम्हारे ऊपर चिल्लाने नहीं आया हूँ। मुझे मालूम है कि तुमने उस स्त्री को क्यों बचाया और मुझे यह भी मालूम है कि तुमने यह इरादा ऐसे ही नहीं किया होगा।

मुझे यह भी मालूम है कि तुम मेरी कितनी परवाह करते हो पर साथ में तुम आदमियों की ज़िन्दगियों की भी परवाह करते हो। इसी लिये मैं वायदा करता हूँ कि मैं खुद अब किसी को नहीं मारूँगा।

वे अपने आप ही मरें तो मरें। जो कुछ मुझे भगवान ने दिया है मैं उसी को स्वीकार करता हूँ।"

मछियारे ने जब पानी के भूत के ये शब्द सुने तो उसको लगा कि जितने भी दोस्त उसने अपनी ज़िन्दगी में बनाये थे उन सबमें यह भूत उसका सबसे अच्छा दोस्त था।

इस घटना के बाद पानी के भूत और मछियारे दोनों ने बहुत सारा समय खाने पीने, ताश खेलने, मछली पकड़ने में बिता दिया। उनकी पहली मुलाकात से आज तक दस साल गुजर गये थे और पानी के भूत ने किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया।

इस बीच समुद्र के बादशाह के महल में येन लो वान अपनी सारे लोगों पर ठीक से नजर रखे था। उसके दूसरे भूत और आत्माएँ बदकिस्मत लोगों को डुबो देते थे और उनकी जगह आदमी बन जाते थे जबकि उसका यह पानी का भूत हुंग माओ पाई अपने क्षेत्र में आने वाले किसी भी आदमी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता था।

उस पानी के भूत ने बड़ी नम्रता से अपनी किस्मत को ही स्वीकार कर लिया था। इसको देख कर जेड बादशाह को भी आश्चर्य होता था।

यह देख कर उसने अपने महल में अपनी काउन्सिल बुलायी जहॉ समुद्र के बादशाह येन लो वान ने जेड बादशाह से पानी के भूत की तरक्की की सिफारिश की तो जेड बादशाह ने पानी के भूत को ज़िला देवता चेंग हुऑग[27] के पद पर तरक्की करने का फैसला किया और उसको वह पद दे दिया।

पतझड़ के मौसम की एक शाम को जब पानी का भूत मछियारे के घर जाने के लिये नदी की गहराइयों से ऊपर उठा तो उसको जेड बादशाह का वज़ीर[28] सामने ही मिल गया। उसके हाथ में उसकी तरक्की का कागज था।

वह तरक्की देख कर पानी का भूत बहुत खुश हुआ और अपनी खुशी छिपा न सका। वह अपनी तरक्की का कागज ले कर तुरन्त ही मछियारे के घर की तरफ दौड़ गया।

पर मछियारा तब तक बाजार से नहीं लौटा था और पानी का भूत अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहता था सो उसने उसके लिये अपने नये घर में आने के लिये एक न्यौता छोड़ा और अपना ऊॅचा ओहदा लेने के लिये वहॉ से उड़ गया।

[27] Cheng Huang god, the District god

[28] Translated for the word “Prime Minister”.

जब मछियारा बाजार से लौटा तो उसने अपने घर में पानी के भूत का वह न्यौता पाया तो उसको विश्वास हो गया कि इस देवता को जरूर ही कुछ गलतफहमी हो गयी है।

काफी दिनों तक मछियारा यह तय नहीं कर पाया कि वह क्या करे – कि वह जाये या नहीं जाये। पर क्योंकि न्यौते का दिन पास आ रहा था इसलिये उसको कुछ तो निश्चय करना ही था सो उसने वह न्यौता स्वीकार करने का निश्चय किया।

एक बात और भी थी कि जिस दिन से मछियारे ने वह न्यौता अपने रसोईघर की मेज पर पाया था तब से ले कर आज तक उसने पानी के भूत को नहीं देखा था।

वह रोज नदी के किनारे पर भी जाता और उसको नदी के गहरे पानी में पुकारता पर उसे कोई जवाब ही नहीं मिलता। वह रोज उसका इन्तजार करता कि वह उसके घर का दरवाजा खटखटायेगा पर वैसा भी कभी नहीं हुआ।

दिन पर दिन मछियारे के शिकार की मछलियों की गिनती कम होती जा रही थीं पर यह सब उसके लिये अपने दोस्त को खोने के सामने कुछ नहीं था।

फिर वह दिन भी आया जब मछियारे को चेंग हुऑग के मन्दिर जाना था। वह वहॉ पहुँचा पर वहॉ की तो जमीन और मन्दिर दोनों ही खाली पड़े थे। शाम हो चली थी और मन्दिर के खम्भों और पेड़ों की पत्तियों के बीच हल्की हवा बह निकली थी।

मछियारा अपनी यात्रा से थक गया था सो उसने मन्दिर के सामने पड़ी एक पत्थर की बैन्च पर पड़ी पत्तियॉ साफ की, उस पर अपनी सूती जैकेट बिछायी और आराम करने के लिये लेट गया। थका था इसलिये लेटते ही सो गया।

सपने में उसने अपने दोस्त पानी के भूत को चेंग हुऑग के कपड़े पहने देखा। उसका दोस्त उसके पास आया और उसने उसको एक सोने की प्लेट दी जिसमें खुशबूदार मॉस रखा हुआ था और एक बहुत ही मुश्किल से मिलने वाली मछली रखी हुई थी।

वह पानी का भूत उसके पास चुपचाप खड़ा रहा और वह मछियारा खाना खाता रहा। जब मछियारे का खाना खत्म हो गया तो पानी के भूत ने सोने के सिक्कों से भरा एक भारी थैला उसकी गोद में रख दिया।

फिर उसके सामने झुक कर बोला — "मेरे अच्छे दोस्त, अगर तुम मेरे दोस्त न होते तो मैंने अब तक बहुत सारे लोग मार दिये होते।

पर तुमने मुझे उस पाप से बचा लिया और अब मैं तुम्हारे सामने तुमको धन्यवाद देने के लिये अपना सिर झुकाता हूँ। अब तुम मुझे कभी नहीं देख पाओगे पर तुम हमेशा मेरे ख्यालों में रहोगे।" और उसके बाद वह पानी का भूत मछियारे के सपने में से चला गया।

जब मछियारे की ऑख खुली तो दिन निकल रहा था। जैसे ही वह अपनी जैकेट उठाने के लिये और मन्दिर से जाने के लिये बैन्च

से उठा एक भारी सा सोने से भरा थैला उसकी गोद से नीचे जमीन पर गिर पड़ा।

मछियारा उस थैले को ले कर घर चला गया और सोचने लगा कि वह केवल उसका सपना ही नहीं था बल्कि उसने सच में ही अपने भूत दोस्त को देखा था।

उसने अपने दोस्त के दिये हुए पैसे को बड़ी अक्लमन्दी से खर्च किया और एक बहुत ही अमीर व्यापारी बन गया। उस दिन के बाद वह उस नदी में कभी मछली पकड़ने नहीं गया और न ही कभी कोई वहॉ डूबा।

पर उस दिन के बाद से वह रोज उस नदी के किनारे जरूर जाता और चेंग हुऑग देवता की प्रार्थना करता।

6 ज़ोर से बोलने वाली स्त्री[29]

भूतों की यह कथा भी एशिया महाद्वीप के चीन देश में कही सुनी जाती है। यह एक मजे की बात है कि कैसे एक ज़ोर से बोलने वाली स्त्री ने अपने आपको भूतों से बचाया और उनकी दुनियॉ में खलबली मचा दी। यह लोक कथा भी बहुत मजे की हॅसी की लोक कथा है। लो तुम भी पढ़ो यह कथा और हॅसो।

नरक का देवता[30] उन सब भूतों की देख भाल करता था जो नरक में रहते थे। पर यह काम उसके लिये बड़ा अजीब सा काम था क्योंकि उसको यहॉ कोई खास काम नहीं था और उसको समय बिताना भी बहुत मुश्किल था।

वह अक्सर खाली ही रहता था क्योंकि नरक ठंडा और अॅधेरा था और वहॉ कोई कोई कभी कभी ही आता था।

एक दिन वह नरक का देवता मरे हुए लोगों के जज[31] के पास गया और उससे उसने प्रार्थना की कि वह और ज़्यादा लोगों को भूत में बदले ताकि वहॉ उसके लिये कुछ काम तो हो और उसका समय भी ठीक से बीते।

---

[29] The Loud Mouthed Woman – a folktale from China, Asia. Adapted from the book: "Chinese Myths and Legends" translated by Kwok Man Ho. 2011. Its Hindi translation is available at hindifolktales@gmail.com as an e-book free of charge.

[30] God of Hell

[31] Judge of Dead

सो मरे हुए लोगों के जज ने नरक के देवता की बात मानी और उसने एक बहुत ही चालाक भूत को धरती पर भेजा और उससे कहा कि वह जितने लोगों को भी मार सके उतने लोगों को मार कर नरक भेज दे।

चालाक भूत ने उसका हुक्म माना और लोगों को भूत बनाने के लिये धरती की तरफ चल दिया।

जब वह चालाक भूत धरती पर पहुँचा तो वह सबसे पहले एक खेत पर गया जो एक वौंग फू[32] नाम की स्त्री का था। वहाँ वह रसोईघर में अपना खाना बना रही थी।

जब वह खाना बना रही थी तो वह भूत उसके मुर्गीखाने में घुस गया और उसकी सारी मुर्गियों को उसमें से निकाल निकाल कर बाहर उड़ा दिया। जब वौंग फू ने देखा कि उसकी सारी मुर्गियाँ खेत में चारों तरफ उड़ गयीं तो वह उनका पीछा करने के लिये उनके पीछे पीछे भागी।

पर मुर्गियाँ तो अब आजाद थीं और अपनी आजादी कौन छोड़ता है सो वे भी उस भूत की सहायता से वौंग फू से एक कदम आगे ही भागती रहीं। पीछा करते करते वौंग फू बहुत थक गयी और दिल का दौरा पड़ जाने की वजह से गिर कर मर गयी।

[32] Wong Fu – name of a Chinese woman

वह भूत उस स्त्री को उठा कर मरे हुए लोगों के जज के पास ले आया और मरे हुए लोगों के जज ने उसको वहॉ से नरक भेज दिया।

वह भूत फिर धरती पर वापस लौट गया और अबकी बार वह एक अमीर आदमी के घर पहुॅचा। वह आदमी रोज तीसरे पहर को अपने पैसे गिना करता था। वह भूत जा कर उसके पास बैठ गया और उसने उसके सोने चॉदी के सिक्के खिड़की से बाहर सड़क पर जाने वालों के सिर पर फेंकने शुरू कर दिये।

उस अमीर आदमी ने उन सिक्कों को पकड़ने की बहुत कोशिश की पर वे उसके हाथ से ऐसे फिसल जाते थे जैसे तेल लगी मछली। इस तरह से उसके पास से सारा पैसा चला गया।

जब उसके हाथ से सारा पैसा चला गया तो वह बहुत दुखी हो कर अपना दिल पकड़ कर कुर्सी में बैठ गया। उसको भी दिल का दौरा पड़ गया था और वह भी वहीं कुर्सी में बैठे बैठे मर गया तो वह भूत उसको भी नरक ले गया।

वह चालाक भूत अब अपनी सफलता पर बहुत खुश हुआ और अब जहॉ भी उसको मौका लगा उसने और दूसरे लोगों को भी तंग करना और डराना जारी रखा।

कभी कभी तो उसको केवल अपना काला बदसूरत चेहरा और बड़े बड़े पीले दॉत ही दिखाने की जरूरत पड़ती और लोग उनको देखते ही मर जाते। इस तरह एक हफ्ते में तो नरक के कमरों में

बहुत सारे भूत भर गये और नरक के देवता के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गयी।

इससे पहले कि यह चालाक भूत वापस नरक लौटता इस भूत की सफलता को देख कर इसको कुछ और लोग लाने के लिये एक हफ्ता और दिया गया। यह देख कर इस भूत ने इस हफ्ते में पिछले हफ्ते से भी ज़्यादा लोगों को मारने का इरादा किया।

एक सुबह जब वह गॉवों में से हो कर गुजर रहा था तो उसको गर्म गर्म चर्बी बनाने की खुशबू आयी। वह उस खुशबू के पीछे पीछे चल दिया तो एक रसोईघर में आया जहॉ एक स्त्री अपने परिवार के लिये दोपहर का खाना बना रही थी।

वह स्त्री लम्बी, मजबूत और अच्छी हड्डियों वाली थी। गॉव भर में वह ज़ोर से बोलने वाली स्त्री के नाम से जानी जाती थी।

जब भूत ने देखा कि वह स्त्री उस चर्बी को एक मिट्टी के बर्तन में पलटने वाली थी तो वह उधर उसका एक घूँट पीने के लिये दौड़ा। पर उसके वहॉ पहुँचने से पहले ही उसने वह बर्तन बन्द कर दिया था।

गुस्से में आ कर उसने अपना पैर पटका और अपने आपसे ही बोला — "उँह यह तो बहुत ही मतलबी ज़ोर से बोलने वाली स्त्री है। सजा के तौर पर मैं इसके चेहरे पर गर्म तेल छिड़कने वाला हूँ जिससे यह जल कर मर जायेगी।"

जैसे ही वह भूत तेल का एक लोटा उसके चेहरे पर छिड़कने के लिये तैयार हुआ कि एक लड़का दौड़ता हुआ उस घर में घुसा। उस लड़के के चेहरे पर बहुत सारी कीचड़ लगी हुई थी।

उसको देख कर वह स्त्री चिल्लायी — "ज़रा अपना यह गन्दा काला चेहरा तो देख। मैंने तुझसे हजारों बार कहा है कि तू कीचड़ में न खेला कर पर तू है कि सुनता ही नहीं।"

बच्चा यह सुन कर रोने लगा तो स्त्री थोड़ी मुलायम पड़ गयी और हॅसते हुए बोली — "चल यहॉ बैठ। मैं अमी तेरे नहाने के लिये पानी गर्म करती हूॅ। गर्म पानी से नहा कर तेरा सारा शरीर साफ हो जायेगा।"

जब भूत ने यह सुना तो उसने सोचा शायद वह स्त्री यह सब उसी से कह रही है। तो वह तो यह सुन कर डर के मारे कॉपने लगा।

वह पानी से ज़्यादा किसी और चीज़ से नहीं डरता था सो उसने उस स्त्री की तरफ दोबारा देखा भी नहीं और अपने हाथ में लिया हुआ तेल का लोटा नीचे रखा और नरक की तरफ भाग लिया।

हॉफते हुए उसने मरे हुए लोगों के जज को उस स्त्री के बारे में बताया जो उसको गर्म पानी में उबालने वाली थी। जज ने धीरज से उसकी बात सुनी और उसको आराम करने के लिये नरक भेज दिया।

जज ने सोचा कि वह इस ज़ोर से बोलने वाली स्त्री को खुद जा कर देखेगा कि वह वाकई वह स्त्री इतनी खतरनाक है या नहीं जितना खतरनाक कि वह भूत उसको बता रहा था।

जब मरे हुए लोगों का जज उस स्त्री के घर पहुँचा तो उसने अपने आपको एक लकड़ी के लट्ठे के रूप में बदल लिया और उसके घर की देहरी[33] पर जा कर लेट गया।

वहाँ से उसने उस स्त्री को उसके नाम से बुलाया तो वह स्त्री अन्दर से बाहर दौड़ी आयी। पर जैसे ही वह अपने दरवाजे पर आयी तो वहाँ लकड़ी का एक लट्ठा देख कर अचानक रुक गयी और ज़ोर से बोली कि यह लकड़ी का लट्ठा वहाँ दरवाजे पर किसने डाला।

पर वहाँ उसकी बात का जवाब देने वाला तो कोई था नहीं सो उसने अपने पति को बुलाया। उसकी कड़कती आवाज सुन कर तो वह मरने वालों का जज भी काँप गया। उसका पति बेचारा तुरन्त ही उसकी पुकार पर दौड़ा चला आया।

उसने अपने पति से कहा — "इस लकड़ी को तुरन्त ही काट दो ताकि हम इसको आज के रात का खाना बनाने के लिये इस्तेमाल कर सकें।" कह कर उसने पैर मार कर उस लट्ठे को एक तरफ को हटा दिया और रसोईघर में चली गयी।

[33] The line between the inside and the outside of the house – translated for the "threshold of the front door".

यह सुन कर उसका पति भी तुरन्त ही एक कुल्हाड़ी लाने के लिये अन्दर चला गया। पति के जाने के बाद मरे हुए लोगों का जज तुरन्त ही अपने असली रूप में आ गया और अपने घायल शरीर को सहलाने लगा।

इससे पहले कि वह स्त्री उसको फिर से मारती वह उड़ कर अपने नरक भाग गया जहॉ जा कर उसने अपनी कहानी नरक के देवता को सुनायी।

नरक के देवता ने इस स्त्री के बारे में अपने चालाक भूत के मुँह से पहले से ही बहुत कुछ सुन रखा था। और अब इस मरे हुए लोगों के जज के मुँह से उसकी कहानी सुन कर तो उसको बहुत ही आनन्द आया कि उस जज को भी उससे परेशानी हुई।

नरक के देवता ने मरे हुए हुए लोगों के जज से कहा — "मुझे पता नहीं कि तुम्हारे दिमाग में क्या घुस गया है पर तुम्हारी रिपोर्ट से तो ऐसा लगता है कि जैसे इस स्त्री के तीन सिर हैं और छह बॉहें हैं।

मुझे लगता है कि इस स्त्री को मुझे खुद ही देखना पड़ेगा। मुझे यकीन है कि मैं उसको एक ही दिन में नरक ले आऊँगा।" और यह सोच कर नरक का देवता खुद ही धरती की तरफ चल दिया।

जब वह धरती पर पहुँचा तो शाम हो चुकी थी। उसने अपने आपको एक साये में बदल लिया ताकि वह उस ज़ोर से बोलने वाली स्त्री के घर में चुपचाप घुस सके।

उस समय सारा परिवार शाम के खाने के लिये इकट्ठा हुआ था सो वह एक सुरक्षित जगह ढूँढने लगा जहाँ वह आराम से छिप सके।

वहीं रसोईघर के एक कोने में घोंघों[34] से भरा एक मिट्टी का बर्तन रखा था सो नरक के देवता ने अपने आपको एक मोटे से घोंघे में बदला और जा कर उस घोंघों वाले बर्तन में बैठ गया।

वहाँ बैठे बैठे वह यह सोचता रहा कि वह उस स्त्री को कैसे मारेगा। तभी उसने उस स्त्री को अपने बेटे से यह कहते हुए सुना कि वह उसको उस मिट्टी के बर्तन में से एक कटोरा मोटे वाले घोंघे ला कर दे।

लड़का उठा और उसने माटे मोटे घोंघे ढूँढने के लिये उस मिट्टी के बर्तन में अपना हाथ डाल दिया और वह उसमें से मोटे मोटे घोंघे ढूँढने लगा। उस बच्चे के हाथ उसके शरीर से कई बार छुए तो वह पास पड़े घोंघों के नीचे और नीचे घुसता गया।

आखिर उस बच्चे ने कुछ घोंघे उठाये और वहाँ से चला गया और वह नरक का देवता अपने आपको खुशकिस्मत समझते हुए कि मैं बच गया उड़ कर वहाँ से अपने घर नरक चला गया।

[34] Translated for the word “Snails”. See its picture above.

जब नरक के देवता ने उस चालाक भूत और मरे हुए लागों के जज को उस स्त्री के बारे में बताया तब भी उसकी सॉस ठीक से नहीं आ रही थी और वह कॉप रहा था।

वह बोला — "अब मुझे पता चला कि तुम लोगों का क्या मतलब था। मुझे लगता है कि मैं बहुत खुशकिस्मत हूँ कि मैं वहॉ से बच कर आ गया हूँ। मुझे लगता है कि वह इस तरह की स्त्री नहीं है इसलिये हमें उसे छोड़ देना चाहिये।"

मरे हुए लोगों का जज तो इस बात पर राजी हो गया पर वह चालाक भूत उस ज़ोर से बोलने वाली स्त्री को मारने पर तुला हुआ था।

उसको लगा कि जब तक वह उसको मार नहीं लेगा उसको चैन नहीं मिलेगा सो जब उसे कोई नहीं देख रहा था तो वह वहॉ से धरती पर जाने के लिये खिसक गया और उस स्त्री के घर पहुँच गया।

अबकी बार वहॉ जा कर उसने उस स्त्री के बदकिस्मत पति को पकड़ लिया और घसीट कर उसको लकड़ी के एक कमरे में बन्द कर दिया।

फिर वह उसके पति की शक्ल में आ गया और अपनी उसी शक्ल में वह उस स्त्री के पलंग पर जा कर लेट गया। उसने सोचा कि वह स्त्री अभी सोने आयेगी तब वह उसे देख लेगा।

पलंग पर लेट कर वह उसकी पत्नी का इन्तजार करने लगा। वह वहॉ बहुत देर तक इन्तजार करता रहा पर वह स्त्री वहॉ नहीं आयी।

बहुत देर तक इन्तजार करने के बाद भी जब वह स्त्री अपने सोने के कमरे में नहीं आयी तो उसे उसको ढूँढने के लिये मजबूरन उस कमरे के बाहर जाना पड़ा।

ढूँढते ढूँढते वह उसको रसोईघर में मिली। उसने देखा कि वह रसोईघर में अपने पैर धो रही थी। वह उसको देख कर बहुत खुश हुआ और दबे पॉव उसके पीछे जा कर उसके कन्धे पर अपना हाथ रख दिया।

फिर वह अपनी सबसे ज़्यादा मीठी आवाज में बोला — "लाओ मैं तुम्हारे पैर धो दूँ। सारा दिन काम करते करते तुम थक गयी होगी। मैं तुम्हारे शरीर में तेल भी लगा दूँगा ताकि तुम्हारी खाल चिकनी हो जाये।"

उस भूत ने महसूस किया कि उस स्त्री के कन्धे कॉप रहे थे। तो बजाय इसके कि वह मुस्कुरा कर पीछे को तरफ घूमती उसने पानी की बालटी उठायी और घूम कर उस भूत के ऊपर उस बालटी का पानी डाल दिया। फिर वह रसोईघर का दरवाजा ज़ोर से बन्द करती हुई रसोईघर से बाहर निकल गयी।

पानी के शरीर पर पडते ही उस भूत ने एक ज़ोर की चीख मारी क्योंकि उस पानी से उसका शरीर पिघलने लगा था।

नरक के देवता ने उसकी वह चीख सुन ली और तुरन्त ही उसने उस भूत को नरक लाने के लिये दो और भूत धरती पर भेज दिये। वे दो भूत उस चालाक भूत को उठा कर नरक ले आये।

जब वह कुछ सँभला तो नरक के देवता ने उसको और दूसरे भूतों को बुला कर एक मीटिंग की। उस मीटिंग में उसने कहा — "बस बहुत हो गया। अब तुम लोग उस स्त्री को छोड़ दो। मुझे उसकी आवाज अब बिल्कुल भी नहीं सुननी।

और उसके जैसी अगर कोई दूसरी स्त्रियाँ हैं भी तो भी तुम लोगों के लिये अब सबसे अच्छा तो यही है कि तुम लोग आदमियों की दुनियाँ ही छोड़ दो।"

सब भूत इस बात पर राजी हो गये और बस उसके बाद भूतों और मरे हुए लोगों के जज ने लोगों को फिर कभी परेशान नहीं किया।

7 चूहों की शादी[35]

भूतों की यह दंत कथा एशिया महाद्वीप के चीन देश की दंत कथाओं से ली गयी है। इसमें ताओ धर्म का एक पुजारी एक आदमी के घर से भूत भगाता है।

एक बार की बात है कि मिंग साम्राज्य के दिनों में यू पहाड़ पर चुई ली पुल के पास वाह चीयू परिवार[36] एक बहुत बड़े घर में रहता था।

एक बार एक नये साल की शाम[37] को घर के मालिक ने अपने घर के एक ऐसे कमरे से खुशी की कुछ चीखों की आवाजें सुनी जो बरसों से बन्द था।

वह तुरन्त उधर गया और जा कर उस कमरे का जंग लगा दरवाजा जितनी आहिस्ता से खोल सकता था उतनी आहिस्ता से खोला और धीरे से उसके अन्दर घुसा।

वहॉ का दृश्य देख कर तो उसको अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसने देखा कि दूर एक कोने में एक बहुत बड़ा काला चूहा गाने बजाने वाले, नौकरों और बरात के जुलूस के आगे आगे चल रहा था।

---

[35] Rats' Wedding – a folktale from China, Asia. Adapted from the book: "Chinese Myths and Legends" translated by Kwok Man Ho. 2011.

[36] The Wah Chiyu family lived in a very large house near Chui Li Bridge on Yu Mountain during the period of Ming Dynasty (1368-1644 AD) – 276 years.

[37] Eve of 31st December is called New Year's Eve.

उस बड़े चूहे के पीछे छह छोटे चूहे एक एक बाजा ले कर नाच रहे थे और दुलहा काला टोप लगाये जिसमें एक सुनहरी फूल लगा था छोटे से घोड़े पर सवार था। उसके दोनों तरफ चार चार चूहे छोटी छोटी भूरे रंग की घोड़ियों पर सवार हो कर चल रहे थे।

घर का मालिक यह देख कर तो और ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गया जब उसने देखा कि आठ आदमी दुलहिन की कुर्सी ले कर जा रहे थे और वे आठों आदमी केवल एक एक फुट लम्बे ही थे।

उन सबके पीछे ऑखों में ऑसू भरे एक बूढ़ा सीडान कुरसी पर बैठा जा रहा था जिसको दो चूहे उठा कर ले जा रहे थे। बरात के इस जुलूस ने उस घर के मालिक के सामने ही कमरे में एक चक्कर काटा और फिर कमरे के दूर वाले कोने में लकड़ी की बनी एक दरार में गायब हो गये।

उन चूहों के गायब हो जाने के बाद घर का मालिक वहॉ से वापस लौट आया पर उसने अपने घर वालों से इस बारे में इस डर से कुछ नहीं कहा कि कहीं उसके घर वाले यह न समझें कि वह इन सब चीज़ों को केवल सोच ही रहा था। वे सचमुच में नहीं घटी थीं।

अगली रात वह फिर वहॉ गया और वहॉ उसने फिर से वे चूहे देखे। उस दिन वे शादी की दावत शुरू करने जा रहे थे।

इस तरह अगले आठ दिन तक वह बराबर उस कमरे में रोज जाता रहा और वहॉ चूहों की शादी के मनाने के तरीके देखता रहा।

दसवीं रात तो उनके नाच से सारा कमरा हिल रहा था क्योंकि वे अमावस्या[38] के आने का त्यौहार मना रहे थे। इसके अगले दस दिन तक उस बूढ़े चूहे ने जो सीडान कुरसी में बैठा था एक टीचर बुलाया जो उसके नये दामाद[39] को लिखना और हिसाब किताब रखना सिखाये।

बीस दिन तक यह सब छिपे छिपे देखने के बाद घर के मालिक से नहीं रहा गया और उसने अपने घर वालों को वह सब बता दिया जो उसने अब तक देखा था। पर किसी ने उसका विश्वास ही नहीं किया।

सो **21**वें दिन वह उन सबको यह दिखाने के लिये उस कमरे तक ले गया जहॉ यह सब हो रहा था पर वहॉ तो कोई भी नहीं था। वे सारे चूहे और छोटे आदमी गायब हो गये थे।

हालॉकि वह उस कमरे में अगले कुछ हफ्तों तक बराबर जाता रहा पर वह कमरा हमेशा ही खाली रहा और उसका परिवार यह सोचता रहा कि वह नये साल की खुशियों के मनाने के बाद में अपने आप ही कुछ कुछ देख रहा था।

[38] Translated for the word “New Moon”

[39] Translated for the word “Son-in-law” – daughter’s husband

उसके बाद फिर कुछ महीने गुजर गये। एक दिन घर का मालिक अपने घर के सामने के दरवाजे के बाहर बैठा था और अपने पड़ोसियों को माहजौंग[40] खेल खेलते और बात करते देख रहा था कि उधर से एक ताओ पुजारी[41] निकला।

वह पुजारी उसके घर के सामने रुक गया और उसके घर की तरफ देख कर उससे बोला — "तुम्हारे घर में एक बहुत ही ताकतवर बुरी आत्मा है और मैं उस आत्मा को तुम्हारे घर में से बाहर निकालने में तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।"

घर के मालिक को उस पुजारी की बातों पर विश्वास हो गया और उसने उसको घर में बुला लिया। पुजारी को उस कमरे का रास्ता दिखाने की जरूरत ही नहीं पड़ी। वह अपने आप ही घर के ऊपर बने उस कमरे में चला गया जहाँ चूहों की शादी हो रही थी।

वहाँ पहुँच कर उसने अपनी कमर की पेटी से लटकी एक लम्बी तलवार निकाली जिसके चारों तरफ सिक्के लगे हुए थे। उसने वह तलवार अपने मुँह के सामने रखी और उसको छत की तरफ कर के उसमें एक फूँक मारी।

उसकी फूँक की हवा एक घने धुँए के रूप में ऊपर उठी। उस धुँए ने फट कर घर के देवता को प्रगट किया। उन देवता ने घर के एक कोने की तरफ इशारा किया और गायब हो गये।

---

[40] Mahjong game – a Chinese puzzle game played by four people

[41] Tao priest – Tao is a Chinese religious practice

जैसे ही वह देवता गायब हुए तो उस कोने की तरफ से वे छोटे आदमी दीवार में से प्रगट हो गये जो उन चूहों के जुलूस में थे और आ कर फर्श पर गिर पड़े।

इससे पहले कि वे आदमी होश में आते पुजारी ने उनके दिलों में अपनी तलवार घुसा कर उनको पकड़ लिया। बाद में घर के नौकरों को उनके शरीरों को और लकड़ी के फर्श से उनका खून साफ करने के लिये बुलाया गया।

घर के मालिक ने पुजारी के सामने इज़्ज़त से सिर झुकाया और उससे पूछा कि वह उस काम के लिये उसको क्या दे।

पुजारी बोला — "तुमको तो मालूम ही है कि मैं ताओ का पुजारी हूँ और मैं दूसरों की सहायता करने के बदले में कुछ नहीं लेता पर क्योंकि मैंने तुम्हारे घर की बुरी आत्मा को निकालने के लिये अपनी सहायता के लिये तुम्हारे घर के देवता को बुलाया था। और मुझे यह भी मालूम है कि उनको धन्यवाद देने के लिये खाने और शराब की जरूरत पड़ेगी।"

घर के मालिक ने हाँ में सिर हिलाया। पर जब वह पुजारी चला गया तो वह सोचता रहा कि उस पुजारी के कहने का क्या मतलब था। क्योंकि उस पुजारी की यह माँग कुछ अजीब सी थी क्योंकि घर के देवता का तो काम ही यह था कि वह घर की बुरी आत्मा को घर में से निकालने में सहायता करे फिर उनको कुछ क्यों देना।

और यह सबको मालूम था कि उनको किसी चीज़ की जरूरत होती नहीं थी। इसके अलावा कोई ताओ पुजारी दूसरे देवता की तरफ से भी कुछ नहीं माँगते थे। यही सोच कर उसने उस पुजारी की माँग पर कोई ध्यान नहीं दिया और अपने घर के देवता को ऐसे ही छोड़ दिया।

पर जैसे ही उसने ऐसा सोचा कि एक गुस्से भरी आवाज घर में गूँज गयी — "मैंने तुम्हारे घर में से एक बुरी आत्मा को बाहर निकालने में तुम्हारी सहायता की और तुम घर के उस देवता के साथ कंजूसी का बर्ताव कर रहे हो जिसने तुम्हारी सहायता की। मैं तुमको शाप देता हूँ कि तुम्हारा परिवार कभी भी शान्ति से नहीं रह पायेगा।"

जब घर के मालिक ने यह धमकी सुनी तो उसको विश्वास हो गया कि ताओ पुजारी के रूप में वह एक शैतान था। पर अब तो अपने परिवार की किस्मत बदलने के लिये उसको बहुत देर हो चुकी थी।

उस दिन के बाद से उसके घर में बहुत सारे चूहे इधर उधर घूमने लगे। वे मेज कुर्सियों के चारों तरफ घूमते, परिवार के कपड़े खाते और उस घर के भंडारघरों में रखी चीज़ें खराब करते।

हालाँकि उन्होंने घर की हर चीज़ को आलमारी और डिब्बों में बन्द कर के रखने की कोशिश की पर उनकी कोई भी तरकीब उन चूहों को उनकी किसी भी चीज़ को बर्बाद करने से नहीं रोक सका।

जैसे ही नौकर पहले का सब कूड़ा साफ करते चूहे फिर वापस आ जाते और फिर से चीज़ों को बर्बाद करने में लग जाते।

दो हफ्ते की इस बर्बादी के बाद उस परिवार ने अपना घर छोड़ दिया। वे चॉग तीन शी से मिलने के लिये किआंग्सी[42] चले गये। चॉग तीन शी उस समय का चीन का सबसे अच्छा ताओ पुजारी था। उसने जब घर के मालिक की कहानी सुनी तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ।

वह खुद अपने कुछ शिष्यों को साथ ले कर वाह चीयू के परिवार के साथ उन चूहों को देखने के लिये उसके घर चल दिया।

जब वाह चीयू का परिवार अपने घर में नहीं था तो वहॉ तो हर कमरे में चूहों ने खूब ऊधम मचाया हुआ था पर जब उनको लगा कि एक बहुत ताकतवर ताओ पुजारी आ रहा है तो वे एक दूसरे के ऊपर गिरते पड़ते वहॉ से छिपने के लिये भाग गये।

चूहों के शाप को नष्ट करने के लिये चॉग तीन शी पुजारी ने पहले घर की रक्षा के लिये पॉच डंडे घर के चारों तरफ गाड़े। फिर अपनी जामुनी पोशाक से टोटकों का एक थैला निकाला और उन टोटकों को घर के मालिक को दे कर उन्हें उन डंडों के ऊपर रखने के लिये कहा।

उसके बाद वह अकेला ही घर के उस कमरे में गया जिसमें घर के मालिक ने चूहों की शादी देखी थी।

---

[42] They went to Kiangsi to see Chang Tien Shih

उसने खूबानी[43] की लकड़ी का एक टुकड़ा निकाला जिस पर कुछ लिखा हुआ था और उससे उस झिरी को बन्द कर दिया जिसमें नये साल की शाम को चूहे गायब हो गये थे।

उसके बाद उसने खूबानी की लकड़ी की ही दो तलवारें निकालीं और उनको भी वहीं उसी झिरी के सामने गाड़ दिया। जब वह यह सब कर रहा था तो वह साथ में कुछ पढ़ता भी जा रहा था।

जब उसकी यह रस्म पूरी हो गयी तो वह वाह चीयू के परिवार और अपने शिष्यों के पास आया। वहॉ वाह चीयू के परिवार ने उसकी खातिरदारी की और फिर वे सब ताओ पुजारी लोग किआंग्सी वापस चले गये।

महीनों बाद वह वाह चीयू परिवार उस घर में शान्ति से सोया। पर पॉच दिन बाद परिवार को हर कमरे में से बदबू आने लगी। यहॉ तक कि वह बदबू उनके कपड़ों में भी बस गयी थी। उस बदबू से सब लोग बहुत परेशान थे।

घर का मालिक डर गया। उसको लगा कि शायद चूहे फिर से आ गये हैं। वह घर के ऊपर वाले कमरे में देखने गया जहॉ कि वह बदबू सबसे ज़्यादा तेज़ थी।

[43] Translated for the word “Peach”. It is a fruit. See its picture above.

उसने अपने नौकरों को वह खूबानी की लकड़ी की डाट[44] जो वह पुजारी लगा कर गये थे तोड़ने के लिये और फिर उस छेद में घुसने के लिये कहा।

पर वह बदबू इतनी तेज़ थी कि उसके कुछ नौकर तो उस छेद में घुसने से पहले ही बेहोश हो गये। पर जो उस छेद में घुस पाये वे खुशी से चिल्ला पड़े।

चॉग तीन शी के टोटकों और खूबानी की लकड़ी के टुकड़ों ने सब चूहों को मार डाला था। असल में वह बदबू उन्हीं मरे हुए चूहों की थी।

सबसे पहले हटाये जाने वाले चूहों में वे दो बहुत बड़े बड़े चूहे थे जिन्होंने वाह चीयू के घर को शापित किया था।

उस दिन के बाद से जो भी यू पहाड़ के आस पास और यॉगट्ज़ी नदी[45] के उत्तर और दक्षिण में रहता है वह शादी के मौके पर शादी की भेंटों के रूप में नमक और चावल घर के हर कोने में रखता है। और वह नये साल की शाम को भी जल्दी सोने चला जाता है ताकि वहॉ चूहे आजादी से आनन्द मना सकें।

चीन के दूसरे हिस्सों में भी नये साल के मनाने के समय एक दिन होता है जिस दिन रात में घर में चूहे आजादी से घूमने दिये

[44] Translated for the word “Seal”

[45] Yangtzi River – a famous and the longest river of China Asia and the third lomgest river of the world after Nile of Africa and Amazon of South America, called also “Yellw River” and “the Sorrow of China”

जाते हैं और खाने पीने दिये जाते हैं कि ताकि आने वाले साल में परिवार आराम और शान्ति से रह सके।

8 भूत ब्राह्मण[46]

भूतों की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के भारत देश के बंगाल प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक गरीब ब्राह्मण था जो बहुत कुलीन घराने का नहीं था सो उसको शादी करने में बहुत मुश्किल हो रही थी। वह कई अमीर लोगों के पास गया और उनसे पैसा देने की भीख माँगी ताकि वह किसी लड़की से शादी कर सके।

उसको काफी पैसे की जरूरत थी। यह पैसा केवल उसको शादी के लिये ही नहीं चाहिये था बल्कि लड़की के माता पिता को देने के लिये भी चाहिये था।

वह बेचारा दर दर भीख माँगता घूम रहा था। बहुत सारे अमीर लोगों की चापलूसी कर रहा था। आखिर उसने धीरे धीरे कर के कुछ पैसे इकट्ठे कर लिये। फिर उसने शादी की और अपनी पत्नी को अपनी माँ के पास अपने घर ले कर आया।

कुछ समय बाद उसने अपनी माँ से कहा — "माँ मेरे पास तुम्हें और अपनी पत्नी को खिलाने पिलाने के लिये कुछ भी नहीं है। इसलिये मुझे पैसा कमाने के लिये किसी दूर देश में जाना चाहिये।

[46] The Ghost Brahman – a folktale from India, Asia. Taken from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. 1912. 1st ed 1883. Its Hindi translation has been published by NBT, Delhi. 2020.

हो सकता है कि मुझे वहॉ सालों लग जायें। क्योंकि मैं तब तक वापस नही आऊॅगा जब तक मैं काफी पैसा न कमा लूॅ।

इस बीच जो कुछ भी मेरे पास है वह मैं तुमको दे कर जाता हूॅ तुम उसको सॅभाल कर खर्च करना और मेरी पत्नी का ख्याल रखना।"

मॉ ने दुखी मन से उसको जाने की इजाज़त दी और आशीर्वाद दे कर विदा किया। मॉ से आशीर्वाद ले कर वह ब्राह्मण अपनी यात्रा पर चल दिया।

उसी शाम एक भूत ने उस ब्राह्मण का रूप रखा और उसके घर आया। ब्राह्मण की पत्नी ने सोचा कि उसका पति वापस आ गया सो उसने उससे पूछा — "अरे तुम इतनी जल्दी वापस कैसे आ गये? तुम तो कह रहे थे कि तुमको तो शायद कई साल लग जायेंगे। फिर तुमने अपना विचार क्यों बदल दिया?"

भूत बोला — "आज का दिन जाने के लिये ठीक नहीं था इसी लिये मैं वापस आ गया। इसके अलावा मुझे कुछ पैसे भी मिल गये थे। अब मैं बाद में जाऊॅगा।"

मॉ को कोई शक नहीं हुआ कि वह उसका बेटा नहीं था। सो वह भूत उस घर में ऐसे रहता रहा जैसे वही उस घर का मालिक हो। वही उस स्त्री का बेटा हो और वही उस नौजवान स्त्री का पति हो।

क्योंकि वह भूत ब्राह्मण और असली ब्राह्मण दोनों इतने एक जैसे लगते थे जैसे दो मटर के दाने तो पड़ोसियों ने भी सोचा कि वह असली ब्राह्मण है।

कुछ साल बाद असली ब्राह्मण अपनी यात्रा से वापस लौटा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने अपने जैसे एक आदमी को अपने घर में देखा।

भूत ब्राह्मण ने असली ब्राह्मण से पूछा — "तुम कौन हो और तुम मेरे घर में क्यों आये हो?"

असली ब्राह्मण बोला — "तुमने क्या कहा कि मैं कौन हूँ? पहले मैं यह तो जान लूँ कि तुम कौन हो। और यह मेरा घर है यह मेरी माँ है और यह मेरी पत्नी है।"

भूत बोला — "यह तो बड़ी अजीब सी बात है। हर आदमी जानता है कि यह मेरा घर है। यह मेरी पत्नी है और यह मेरी माँ है। और मैं तो यहाँ सालों से रह रहा हूँ। और तुम कहानी बना रहे हो कि यह तुम्हारा घर है और वह स्त्री तुम्हारी पत्नी है। ओ ब्राह्मण तुम्हारा दिमाग फिर गया लगता है।"

ऐसा कह कर भूत ने ब्राह्मण को उसके अपने ही घर से बाहर निकाल दिया। ब्राह्मण के मुँह से तो आवाज भी नहीं निकली। उसको यह भी अन्दाज नहीं पड़ा कि वह क्या करे। आखिर उसने अपना मामला राजा के सामने रखने का सोचा।

राजा ने भूत ब्राह्मण को देखा और फिर ब्राह्मण को देखा तो दोनों तो एक दूसरे की हूबहू एक सी शक्ल के थे। यह देख कर तो वह भी परेशान हो गया।

उसको तो पता ही नहीं चल रहा था कि कौन कौन था। और जब यही पता नहीं चल रहा था कि कौन कौन है तो वह उनका झगड़ा कैसे सिलटाये।

ब्राह्मण रोज ही राजा के पास जाता रहा और उससे अपना घर अपनी मॉ और अपनी पत्नी वापस दिलवाने की प्रार्थना करता रहा। और राजा यह न पहचान पाने की वजह से कि कौन असली ब्राह्मण था और कौन भूत ब्राह्मण रोज उसे अगले दिन आने के लिये टालता रहा।

राजा रोज ही उससे कहता "कल आना।" और असली ब्राह्मण रोज ही अपना सिर पीटता हुआ और यह कहता हुआ वहॉ से चला जाता "उफ़ यह कैसी नीच दुनियॉ है। मुझे अपने ही घर से बाहर निकाल दिया गया है और एक दूसरे आदमी ने मेरे घर मेरी मॉ और मेरी पत्नी को ले रखा है। और यह राजा भी क्या अजीब चीज़ है। यह भी कोई न्याय नहीं करता।"

अब ऐसा हुआ कि क्योंकि ब्राह्मण राजा के दरबार से रोज ही शहर के बाहर चला जाता था तो वह एक ऐसी जगह से गुजरता था जहॉ बहुत सारे चरवाहे बच्चे खेलते रहते थे। वे अपने गायों बैलों

को घास के मैदान में चरने के लिये छोड़ देते और वे खुद एक पेड़ के नीचे खेलने के लिये इकट्ठा हो जाते। वे शाही खेल खेलते थे।

उनमें से एक चरवाहे को राजा बना दिया जाता दूसरे को वजीर और तीसरे को कोतवाल और उनमें से कुछ पुलिस बन जाते।

वे रोज ब्राह्मण को उधर से रोते जाते हुए देखते तो एक दिन वजीर चरवाहे ने उस ब्राह्मण से पूछा कि वह रोज वहाँ से रोता हुआ क्यों जाता था। ब्राह्मण ने उसे अपनी कहानी सुनायी तो वजीर चरवाहा उसके सवाल का जवाब नहीं दे सका।

इस पर वजीर चरवाहा राजा चरवाहे के पास गया और उसे ब्राह्मण की बात बतायी। राजा चरवाहे ने एक सिपाही चरवाहे को बुलाया और उस ब्राह्मण को अपने सामने लाने का हुक्म दिया।

वह सिपाही चरवाहा ब्राह्मण के पास गया और उससे जा कर कहा — "हमारे राजा तुमको बुला रहे हैं।"

ब्राह्मण यह सुन कर आश्चर्यचकित रह गया — "मगर क्यों? मैं अभी अभी राजा के पास से ही तो आ रहा हूँ। उन्होंने अभी तो मुझसे कल आने के लिये कहा था। अब वह मुझे फिर क्यों बुला रहे हैं?"

सिपाही चरवाहा हँसा और बोला — "यह हमारे राजा हैं जो तुमको बुला रहे हैं। हम चरवाहों के राजा हैं शहर के राजा नहीं।"

ब्राह्मण ने पूछा — "यह चरवाहों का राजा कौन है?"

"आओ और अपने आप ही देख लो।"

ब्राह्मण उस सिपाही चरवाहे के साथ उनके राजा चरवाहे के पास चला गया।

राजा चरवाहे ने ब्राह्मण से पूछा — "हे ब्राह्मण देवता, मैं आपको रोज इधर से रोते जाते देखता हूँ। आप क्यों रोते हैं?" इस पर ब्राह्मण ने उसको भी अपनी कहानी सुना दी।

राजा चरवाहे ने उसकी कहानी सुन कर कहा— "मैं आपकी हालत समझ सकता हूँ। मैं आपकी सब चीज़ें आपको वापस दिलवा दूँगा पर अभी आप शहर के राजा के पास जाऐं और उससे यह इजाज़त ले कर आऐं कि मैं आपका मामला सिलटा सकूँ।"

ब्राह्मण फिर से राजा के पास गया और उससे चरवाहे राजा से अपना मामला सिलटाने की इजाज़त माँगी जिसने उसको यह मामला सिलटाने के लिये कहा था।

राजा ने देखा कि उससे तो उस ब्राह्मण का मामला सिलट नहीं रहा था तो उसने उस राजा चरवाहे को यह मामला सिलटाने की इजाज़त दे दी।

राजा चरवाहे ने ब्राह्मण को अगले दिन सुबह आने के लिये कहा। ब्राह्मण चला गया। ब्राह्मण के जाने के बाद राजा चरवाहे ने सारे मामले पर विचार किया और अगले दिन एक तंग गर्दन की शीशी ले कर अपनी अदालत मं आया।

अगले दिन ब्राह्मण और भूत ब्राह्मण दोनों उसकी अदालत में आये। वहॉ काफी देर तक पूछागछी होती रही। गवाहियॉ होती रहीं।

उसके बाद राजा चरवाहा बोला — "मैंने आप लोगों के मामले के बारे में काफी सुन लिया। मैं आपका मामला अब बहुत जल्दी ही सिलटा देता हूॅ।

देखिये यह शीशी है। आप दोनों में से जो कोई भी इस शीशी में पहले घुस जायेगा वही इस घर का मालिक होगा जिस पर लड़ाई चल रही है। अब मैं देखता हूॅ कि कौन पहले इस शीशी में घुसता है।"

इतना कह कर उसने उस शीशी की डाट खोल दी और शीशी का खुला मुॅह असली ब्राह्मण और भूत ब्राह्मण की तरफ कर दिया।

यह देख कर असली ब्राह्मण बोला — "तुम तो गाय भैंस चराने वाले चरवाहे हो और तुम्हारी अक्ल भी वैसी ही एक चरवाहे वाली है। ऐसा कौन सा आदमी है जो इस तंग गर्दन वाली छोटी सी शीशी में घुस सकता है। उॅह।"

राजा चरवाहा बोला — "अगर आप इस तंग गर्दन वाली छोटी सी शीशी में नहीं घुस सकते तो इसका मतलब यह है कि आप इस घर के मालिक नहीं हैं। यह तो बड़ी सीधी सी बात है।"

फिर वह भूत ब्राह्मण की तरफ देख कर बोला — "आपका क्या विचार है जनाब?"

राजा चरवाहा आगे बोला — "हॉ अगर आप इस शीशी में घुस सकते हैं तो यह घर, यह मॉ और यह पत्नी सब आपके हैं।"

भूत ब्राह्मण बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। मैं इस शीशी के अन्दर घुस सकता हूँ।"

और अपनी बात को रखते हुए और सबको आश्चर्य में डालते हुए उसने अपने आपको एक बहुत ही छोटे से कीड़े में बदला और तुरन्त ही उड़ कर उस शीशी में घुस गया।

जैसे ही वह भूत ब्राह्मण उस शीशी में घुसा तो राजा चरवाहे ने उस शीशी का मुँह उसकी डाट लगा कर बन्द कर दिया। अब वह भूत ब्राह्मण शीशी में बन्द हो गया और फिर उसमें से बाहर नहीं निकल सका।

फिर राजा चरवाहे ने असली ब्राह्मण से कहा — "लीजिये ब्राह्मण देवता अब आप इस शीशी को ले जाऐं और समुद्र में फेंक दें। और जा कर अपना घर अपनी मॉ और अपनी पत्नी को सँभालें।"

ब्राह्मण तो उसका फैसला देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गया और बहुत खुश हुआ कि जो न्याय शहर का राजा नहीं कर सका वह न्याय एक मामूली से चरवाहे ने पल भर में कर दिया।

उसको बहुत बहुत धन्यवाद देते हुए अपने घर चला गया और बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहा। उसके कई बेटे बेटियॉ भी हुए।

9 भूतनी पत्नी[47]

भूतों की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के भारत देश के बंगाल प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक गरीब ब्राह्मण अपनी मॉ और पत्नी के साथ रहता था। उसके घर के पास ही एक तालाब था जिसके किनारे पर एक पेड़ खड़ा था। उस पेड़ के ऊपर एक शंखचिन्नी[48] भूतनी रहती थी।

एक दिन रात को ब्राह्मण की पत्नी को उस तालाब पर जाना पड़ा। जब वह उस तालाब पर जा रही थी तो रास्ते में शंखचिन्नी भूतनी खड़ी थी। ब्राह्मणी उससे छू गयी।

इस पर वह भूतनी उस ब्राह्मणी से बहुत गुस्सा हो गयी और उसने उसको गले से पकड़ लिया और अपने पेड़ पर चढ़ गयी। वहॉ ले जा कर उसने उसको पेड़ के तने के एक छेद में ढकेल दिया।

[47] The Ghostly Wife – a folktale from India, Asia. Taken from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. 1912. 1st ed 1883. Its Hindi translation has been published by NBT, Delhi. 2020 with the title "Bengal Ki Lok Kathayen".

[48] Shankchinnis or Shankhachurnis are female ghosts of white complexion. They usually stand at the dead of night at the foot of trees, and look like sheets of white cloth.

वहॉ तो वह स्त्री डर के मारे मरी सी पड़ गयी। भूतनी ने उसके कपड़े उतार कर खुद पहने और ब्राह्मण के घर चली गयी। तो न तो ब्राह्मण ने और न ही उसकी मॉ ने बहू में कोई बदलाव देखा।

ब्राह्मण ने सोचा कि उसकी पत्नी तालाब से वापस आ गयी है और ब्राह्मण की मॉ ने सोचा कि उसकी बहू तालाब से वापस आ गयी है। पर अगली सुबह मॉ ने अपनी बहू में कुछ बदलाव देखा।

उसकी बहू शरीर से कुछ कमजोर थी सो वह कोई भी काम करने में देर लगाती थी। पर यह क्या। आज तो वह कुछ बदली हुई लग रही थी। आज तो वह अपना काम बहुत जल्दी जल्दी कर रही थी।

उस समय तो उसने उसके इस व्यवहार को कुछ अनदेखा कर दिया और यह बात न तो उसने अपने बेटे से कही और न बहू से ही उसने कुछ कहा बल्कि मन ही मन बहुत खुश हुई कि उसकी बहू अब बदल गयी है और अब वह काम जल्दी जल्दी करने लगी है।

पर यह बात उसके मन से नहीं गयी। उसका आश्चर्य रोज ब रोज बढ़ता ही गया।

अब उसकी बहू का खाना पहले की बजाय बहुत जल्दी बन जाता। जब वह उसको पास के कमरे से कुछ लाने के लिये कहती तो वह उसको उतने से भी कम समय में ले आती जितना समय किसी आदमी को एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने में लगता है।

क्योंकि वह भूतनी बजाय उस कमरे में जाने के अपना हाथ लम्बा कर के उस कमरे तक बढ़ाती और वह चीज़ वहॉ से उठा लेती। क्योंकि भूत तो अपने शरीर के हिस्सों को अपनी इच्छा अनुसार छोटा बड़ा कर सकते हैं।

एक दिन मॉ ने भूतनी को यह करते देख लिया तो उस दिन उसने बहू से कुछ दूर से एक बर्तन मॅगवाया तो भूतनी ने अनजाने में ही अपना हाथ कई गज लम्बा किया और पल भर में ही उसको वह बर्तन ला कर दे दिया। मॉ तो देखती की देखती ही रह गयी।

उसने बहू से तो कुछ नहीं कहा पर यह बात उसने अपने बेटे को बतायी। उसके बाद मॉ और बेटे ने उसको बहुत करीब से देखना शुरू कर दिया।

एक दिन मॉ ने देखा कि घर में आग नहीं है और उसको यह भी मालूम था कि उसकी बहू उसे लाने के लिये कहीं बाहर भी नहीं गयी है। पर तभी उसने देखा कि रसोईघर के चूल्हे में तो आग जल रही है।

वह अन्दर गयी तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसकी बहू खाना पकाने के लिये किसी ईंधन का इस्तेमाल नहीं कर रही बल्कि उसकी अपनी टॉग चूल्हे में रखी हुई है। और उसकी वही टॉग जल रही है।

~

मॉ ने जो कुछ देखा था वह अपने बेटे को बताया कि उसकी बहू चूल्हा जलाने के लिये किसी ईंधन का इस्तेमाल नहीं कर रही थी बल्कि अपनी टॉग चूल्हे में जला रही थी।

इससे दोनों ने यह तय किया कि वह बहू उस लड़के की असली पत्नी नहीं थी बल्कि कोई भूतनी थी। बाद में लड़के ने भी वे सब काम जो उसकी मॉ ने देखे थे खुद अपनी ऑखों से देखे।

सो एक ओझा[49] बुलाया गया। जब वह आया तो सबसे पहले तो वह यही जानना चाहता था कि वह स्त्री असली बहू थी या भूतनी थी।

यह जानने के लिये कि वह स्त्री स्त्री थी या कोई भूतनी थी उसने सबसे पहले हल्दी की एक गॉठ जलायी और उसको उस स्त्री की नाक के नीचे रखा।

यह एक न फेल होने वाला तरीका था जिससे यह जाना जा सकता था कि कोई भूत था या आदमी। क्योंकि कोई भी भूत जलती हुई हल्दी की बू सहन नहीं कर सकता था।

जैसे ही वह जलती हुई हल्दी की गॉठ उस स्त्री की नाक की तरफ ले जायी जा रही थी तो वह स्त्री बहुत ज़ोर से चिल्लाती हुई कमरे से बाहर भागी।

[49] Translated for the word “Exorcist”

~

इससे अब यह साफ हो गया कि वह स्त्री या तो खुद ही कोई भूतनी थी और या फिर वह स्त्री थी पर किसी भूत या भूतनी ने उसको पकड़ लिया था।

ओझा ने उस स्त्री को पकड़ कर उससे पूछा कि वह कौन थी।

पहले तो उसने कुछ भी बताने से इनकार कर दिया तो ओझा ने अपने जूते निकाले और उनसे उसको पीटना शुरू किया।

इस पर भूतनी नाक की आवाज में बोली कि वह एक शंखचिन्नी थी जो तालाब के किनारे एक पेड़ पर रहती थी। उसने ब्राह्मणी बहू को अपने पेड़ के तने के एक छेद में रखा हुआ है। क्योंकि एक रात उसने उसको छू लिया था। और अगर कोई भी आदमी उस छेद की तरफ जाता तो वह स्त्री वहॉ देख ली जाती।

यह सुन कर वह स्त्री उस पेड़ के तने के छेद में से लायी गयी। वह तो बिल्कुल मरी जैसी हो रही थी।

भूतनी को फिर से जूतों से पीटा गया तो उसने कहा कि वह अब आगे से ब्राह्मण और उसके परिवार के साथ ऐसा कभी नहीं करेगी। ओझा ने उसे छोड़ दिया और वह अपनी जगह चली गयी।

ब्राह्मण की पत्नी भी धीरे धीरे ठीक हो गयी। वे दोनों बहुत सालों तक खुशी खुशी रहे और फिर उनके बहुत सारे बच्चे हुए।

~

10 भूत जो थैले में बन्द होने से डरता था[50]

भूतों की यह लोक कथा एशिया के भारत देश के बंगाल प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है। यह वहॉ की एक बहुत ही लोकप्रिय कथा है। तो लो तुम भी पढ़ो यह लोक कथा अब हिन्दी में।

यह लोक कथा डरावनी नहीं है सो इसको पढ़ने से पहले डरने की कोई जरूरत नहीं है। यह एक हॅसी की लोक कथा है। पढ़ो और हॅसो।

एक बार की बात है कि एक नाई अपनी पत्नी के साथ रहता था। पर वह अपनी पत्नी के साथ खुश नहीं था क्योंकि उसकी पत्नी हमेशा यही शिकायत करती थी कि वहॉ उसको ठीक से खाने को नहीं मिलता।

वह इस गरीब नाई को बहुत दुखी करती थी। वह हमेशा अपनी पति से कहती थी कि अगर तुमको मुझे खिलाने को नहीं था तो तुमने मुझसे शादी क्यों की। जिन लोगों के पास अपनी पत्नी को रखने के साधन नहीं होते उनको शादी नहीं करनी चाहिये।

जब मैं अपने पिता के घर में थी तो वहॉ उनके घर में खाने पीने के लिये बहुत था। पर यहॉ तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं यहॉ

[50] The Ghost Who Was Afraid of Being Bagged – a folktale from India, Asia. Taken from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. 1912. 1st ed 1883. Its Hindi translation has been published by NBT, Delhi. 2020 with the title "Bengal Ki Lok Kathayen".

उपवास करने[51] के लिये आयी हूॅ। केवल विधवाऐं हीं उपवास करती हैं। और मुझे लगता है कि मैं तो तुम्हारी ज़िन्दगी में ही विधवा हो गयी हूॅ।"

वह यह सब कह कर ही सन्तुष्ट नहीं होती थी। एक दिन वह बहुत गुस्सा हो गयी और उसने उसे झाड़ू से पीट दिया।

कुछ तो शर्म की वजह से और कुछ यह सोचते हुए कि वह खुद ही उसके गुस्से और पीटने की वजह है उसने अपना नाईगीरी का सामान उठाया और घर छोड़ कर चला गया।

उसने कसम खायी कि अब जब तक वह अमीर नहीं हो जायेगा वह अब यहॉ कभी वापस नहीं आयेगा और न ही अपनी पत्नी का मुॅह देखेगा।

वह दिन में गॉव गॉव घूमता फिरता अपनी नाईगीरी करता और रात को जंगल के किनारे पर लगे किसी पेड़ के नीचे आ कर बहुत देर तक अपनी किस्मत को कोसता रहता।

एक दिन ऐसा हुआ कि वह नाई उस दिन जिस पेड़ के नीचे लेटा हुआ था उस पर एक भूत रहता था। भूत ने एक आदमी पेड़ के नीचे लेटा हुआ देखा तो उसने उसको खाना चाहा।

इस इरादे से वह भूत पेड़ से नीचे उतरा, उसने अपने हाथ फैलाये और अपना मुॅह फाड़ कर ताड़ के पेड़ जितना लम्बा हो कर

[51] Translated for the word "Fasting". Fasting means either less eating or not eating once a day or even not eating at all for the day.

नाई के सामने खड़ा हो गया और बोला — "ओ नाई अब मैं तुझे खाने वाला हूँ। अब तुझे कौन बचायेगा?"

एक भूत को अपने सामने इस तरह से खड़ा देख कर और उसके मुँह से यह सुन कर तो नाई के सारे बाल खड़े हो गये और उसका पूरा शरीर काँप गया पर भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि उसका दिमाग अभी काम कर रहा था।

वह अपनी आदत के मुताबिक बोला — "ओ आत्मा, तुम मुझे खाने आयी हो। ज़रा रुको पहले मैं तुम्हें यह तो दिखा दूँ कि मैंने आज रात को ही कितने भूत पकड़े हैं जो मेरे थैले में बन्द हैं। और मुझे खुशी है कि मुझे एक भूत और मिल गया। क्योंकि अब मेरे थैले में एक भूत और बढ़ जायेगा।"

कह कर नाई ने अपने थैले में से मुँह देखने वाला एक छोटा सा शीशा निकाला। वह शीशा वह अपने नाई के सामान के साथ हमेशा ही अपने साथ रखता था ताकि उसके ग्राहक उसमें अपना चेहरा देख सकें कि उनकी हजामत ठीक से बनी या नहीं।

उस शीशे को ले कर वह खड़ा हो गया और उसने वह शीशा उस भूत के चेहरे के सामने कर दिया और बोला — "देखो उन भूतों में से एक भूत यह रहा जिसको मैंने पकड़ कर अपने थैले में बन्द कर रखा है।

अब मैं तुमको भी बन्द कर के इसी थैले में डाल लूँगा ताकि मेरे थैले वाले भूत को एक साथी मिल जाये।"

भूत ने अपना चेहरा जो उस शीशे में देखा तो उसे विश्वास हो गया कि नाई जो कुछ कह रहा था वह सच ही कह रहा था कि उसने अपने थैले में भूत बन्द कर रखे थे।

वह डर गया। अब वह नाई से बड़ी मुलायमियत से बोला — "नाई जनाब, तुम जो कहोगे मैं वही करूँगा पर बस तुम मुझको अपने थैले में नहीं रखना। तुम जो कहोगे मैं तुमको वही दे दूँगा।"

नाई उसको इतनी मुलायमियत से बात करते देख कर अकड़ कर बोला — "तुम सारे भूत बहुत ही झूठे होते हो। तुम लोगों पर कोई विश्वास नहीं किया जा सकता। पहले तुम वायदा करते हो और फिर उसे पूरा नहीं करते हो।"

भूत गिड़गिड़ा कर बोला — "नाई जनाब। मेरे ऊपर दया करो। मैं तुमको वही ला कर दूँगा जो भी तुम मुझे ला कर देने को कहोगे। हॉ अगर में तुमको वह चीज़ ला कर न दूँ जो तुम कहो तब तुम मुझे अपने थैले में रख सकते हो।"

नाई बोला — "तब ठीक है। अच्छा तो अभी तो मुझे तुम एक हजार सोने की मुहरें[52] ला कर दो। और देखो कल तक मेरे लिये मेरे घर में एक अनाजघर तैयार करो जो धान[53] से भरा हुआ हो।

[52] 1000 gold coins or 1000 Muhar as they were called – currency at that time in India.
[53] Translated for the word Paddy". Paddy is the raw rice from which the rice is extracted.

~

अभी तो तुम जल्दी से जाओ और सबसे पहले मेरे लिये पहले एक हजार मुहरों का इन्तजाम करो। और अगर तुम मेरे लिये वह नहीं लाये जो मैंने तुमसे लाने के लिये कहा है तो निश्चित रूप से तुम मेरे थैले में बन्द हो जाओगे।"

भूत इस शर्त पर तुरन्त ही तैयार हो गया। वह वहॉ से जल्दी जल्दी गया और थोड़ी ही देर में एक हजार सोने की मुहरों का एक थैला ले कर वहॉ आ गया।

नाई तो उन मुहरों को देख कर बहुत ही खुश हो गया। उसने भूत को फिर से याद दिलाया कि कल शाम तक उसको उसके घर में एक अनाजघर बनवाना है जिसमें धान भरा हो।

सुबह सवेरे ही नाई अपने भारी खजाने को ले कर घर आया और घर का दरवाजा खटखटाया। उसकी पत्नी अभी तक अपने पति को गुस्से में झाड़ू से मारने के लिये अपने आपको कोस रही थी कि मैंने अपने पति को झाड़ू से क्यों मारा।

दरवाजे की खटखटाहट सुन कर उसने दरवाजा खोला तो उसको तो बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसके पति ने उसके सामने सोने की चमकती हुई मुहरों का ढेर लगा दिया।

अगले दिन बेचारे भूत ने थैले में बन्द हो जाने के डर से नाई के घर में एक बहुत बड़ा अनाजघर बना दिया। सारी रात वह धान के

बड़े बड़े थैले उठा कर वहॉ लाता रहा और उसके अनाजघर में वह धान भरता रहा जब तक वह ऊपर तक नहीं भर गया।

जब इस डरे हुए भूत के चाचा ने देखा कि उसका लायक भतीजा इस तरह से चावल के बड़े बड़े थैले ला ला कर उस अनाजघर को भर रहा है तो उसने उससे पूछा कि यह मामला क्या है। तू ऐसा क्यों कर रहा है। उसके भतीजे ने उसे सब बताया कि क्या मामला था।

उसके चाचा भूत ने कहा — "तू तो बहुत ही बेवकूफ है। तू क्या सोचता है कि वह नाई तुझे अपने थैले में बन्द कर सकता है? अरे वह नाई तो बहुत ही चालाक है। वह तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। उसने तुझे धोखा दिया है क्योंकि तू बहुत सीधा है न।"

भतीजा भूत बोला — "तुम नाई की ताकत पर शक करते हो तो ज़रा आओ और देखो। मैं तुमको दिखाता हूॅ।"

सो चाचा भूत नाई के घर गया और उसकी खिड़की में से उसके घर में झॉका। जैसे ही भूत नाई के घर के पास आया नाई को भूत के आने का उसी समय हवा का एक तेज़ झोंका महसूस हुआ तो उसने उस खिड़की के सामने एक बहुत बड़ा शीशा रख दिया।

और बोला — "आओ अब तुम ज़रा आ कर देखो तो। मैं तो तुमको भी इस थैले में बन्द कर लूॅगा।"

~

चाचा भूत ने जब उस शीशे में अपना चेहरा देखा तो वह भी डर गया और उसने नाई से वायदा किया कि वह उसके घर में एक और अनाजघर बनवायेगा जिसमें धान नहीं बल्कि चावल भरा होगा।

इस तरह वह नाई केवल दो रातों में ही बहुत अमीर हो गया और फिर अपनी पत्नी के साथ बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहा। बाद में उसके कई बेटे बेटियॉ भी हुए।

~

11 भूत जो भाग गया[54]

भूत की यह लोक कथा भारत के हिमाचल प्रदेश के कॉगड़ा क्षेत्र में कही सुनी जाती है। यह किसी सच्चे भूत की कथा नहीं है। तो फिर कैसे भूत की कथा है यह? आओ देखते हैं।

एक बार की बात है कि कॉगड़ा जिले के एक गॉव में एक नौजवान रहता था। उसका नाम था धनियॉ। उसकी दाल मसाले की दूकान थी जिसकी आमदनी से वह और उसकी पत्नी आराम से रह लेते थे। वह बहुत ही सीधा सादा था।

वह इतना सीधा था कि उसको अपनी रोजमर्रा की परेशानियों को भी हल करने में बहुत मुश्किल होती थी। और फिर जब कभी ऐसा होता तो उन परेशानियों का हल ढूँढने के लिये वह अपने दोस्त कुलफी राम के पास भागा जाता।

कुलफी राम एक हाथ देखने वाला था। वह रोज एक आम के पेड़ के नीचे बैठता था और वहॉ लोगों के आने का इन्तजार करता जो उसके पास अपना भविष्य पूछने के लिये अपना हाथ दिखाने के लिये आते थे।

[54] The Ghost That Got Away – a folktale from HP, India – Adapted from the Web Site : http://www.indianetzone.com/32/folktale_himachal_pradesh_indian_folktale.htm

एक दिन जब कुलफी राम इस तरह से आम के पेड़ के नीचे बैठा अपने ग्राहकों का इन्तजार कर रहा था तो धनियॉ उसके पास दौड़ता हुआ आया। उस समय वह और दिनों से कुछ ज़्यादा ही परेशान लग रहा था।

उसको ऐसे आते देख कर कुलफी राम हॅस पड़ा। उसने उससे पूछा — "आज तुम्हारे ऊपर ऐसा कौन सा कहर आ पड़ा कि तुम इतने परेशान लग रहे हो?"

धनियॉ बोला — "दोस्त मैं वाकई बहुत परेशान हूॅ क्योंकि मुझे अपनी ससुराल जाना है।"

यह सुन कर तो कुलफी राम और ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला — "तो इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है तुमको तो खुश होना चाहिये। क्योंकि वहॉ जा कर तो तुम्हारी बहुत खातिरदारी होने वाली है।

वे लोग तुमको बहुत अच्छी तरीके से रखेंगे। तुम्हारी हर जरूरत का खयाल रखने के लिये वे इधर से उधर भागे फिरेंगे।"

अब तक धनियॉ का धीरज छूट गया था। उसने कहा कि वह वहॉ जाना नहीं चाहता था क्योंकि वहॉ जाते में उसको डर लगता था।

अब क्योंकि उसकी पत्नी उसके साथ तो जा नहीं रही थी तो उसको वहॉ अकेले ही जाना था। और उसको तो यह भी नहीं पता था कि वहॉ जा कर वह उनसे बात कैसे करेगा।

यह सुन कर कुलफी राम ने पहले तो अपना हाथ धनियॉ के हाथ पर ज़ोर से मारा और फिर थपथपाया फिर बोला — "तुम बिल्कुल चिन्ता न करो मैं तुम्हें सब बता दूँगा कि वहॉ जा कर तुम्हें क्या कहना है क्या करना है।"

धनियॉ को अभी भी अपने ऊपर भरोसा नहीं था सो वह बोला कि अगर वह खुद उसके साथ चले तो बहुत अच्छा रहेगा। कुलफी राम को तो यह सुन कर बहुत अच्छा लगा और वे दोनों अगले दिन धनिया की ससुराल चल दिये।

रास्ते में कुलफी राम ने धनियॉ को बताया कि वहॉ जा कर उसको दो बातों का ख्याल रखना है। पहली बात तो यह कि उसको वहॉ जा कर बहुत ज़्यादा बात नहीं करनी है। दूसरे वहॉ उसको बहुत ज़्यादा खाना नहीं है।

कुछ घंटे बाद वे दोनों धनियॉ की ससुराल आ पहुँचे। धनियॉ की पत्नी का पूरा परिवार उनकी अगवानी के लिये बाहर आ गया। धनियॉ की सास ने धनियॉ का हाथ जोड़ कर स्वागत किया।

धनियॉ का चेहरा धीरे धीरे लाल पड़ता जा रहा था पर कुलफी राम ने उसको बहुत बोलने से मना कर रखा था इसलिये उसने भी

अपनी सास के स्वागत का जवाब केवल हाथ जोड़ कर ही दिया। वह बोला कुछ नहीं।

धनियॉ की बजाय कुलफी राम बोला कि धनियॉ इस लम्बी यात्रा से कुछ थक गया था सो उसको रात भर की नींद की जरूरत है।

सो तुरन्त ही वे रात के खाने के लिये ले जाये गये। वहॉ उनको नीचे फर्श पर बिछे तिनकों के एक मोटे आसन पर बिठाया गया और फिर उनको खाना परोसा गया।

खाना देख कर तो धनियॉ की ऑखें फटी की फटी रह गयीं। खास कर के लाल लाल करारी पूरियॉ देख कर। वे पूरियॉ तो उसने दो पूरियॉ एक ही बार में खा लीं पर फिर उसको अपने दोस्त कुलफी राम की सलाह याद आयी तो उसको तो उसकी सलाह माननी ही थी।

सो दूसरी पूरी खाने के बाद जो कुछ भी उसको खाने के लिये दिया गया उसने हर वह चीज़ खाने के लिये मना कर दिया। हालॉकि खाने को मना करने का उसका मन बिल्कुल नहीं था फिर भी वह हर खाने की चीज़ को मना करता ही रहा।

उधर कुलफी राम बराबर खाता ही रहा और अपना हर कौर मजे ले ले कर खाता रहा।

~

खाना खाने के बाद दोनों दोस्तों को एक दूसरे कमरे में ले जाया गया जहॉ दो बिस्तर लगे हुए थे। इन बिस्तरों के गद्दे बहुत ही मुलायम थे और इतने आरामदेह थे कि वे दोनों उन पर लेटते ही सो गये।

पर आधी रात को धनियॉ की ऑख खुल गयी। उसके पेट में भूख के मारे चूहे कूद रहे थे। वह बहुत भूखा था।

धनियॉ कुछ देर तक तो इस आशा में लेटा रहा कि शायद उसको नींद आ जाये पर कुछ देर बाद ही उसको पता चल गया कि इतनी भूख में वह सो नहीं पायेगा। जैसे जैसे समय गुजरता जा रहा था उसकी भूख बढ़ती जा रही थी।

आखिर वह उसको सह नहीं सका तो उसने अपने दोस्त को हाथ से हिला कर जगाया।

कुलफी राम कुछ नाराज सा तो हुआ पर उसने बिस्तर से उठ कर दरवाजा खोल कर इधर उधर देखा। उनके कमरे से घर का ऑगन दिखायी देता था।

ऑगन के उस पार एक कमरा था जो शायद घर का भंडारघर था क्योंकि उन लोगों ने घर की मालकिन को उस कमरे मे जा कर घी का डिब्बा लाते हुए देखा था। इस भंडारघर में खाने के लिये जरूर ही कुछ रखा होगा। पर इस कमरे के दरवाजे पर तो ताला भी लगा था।

~

कुलफी राम ने कुछ पल सोचा और बोला कि जब तक हम तुम्हारी सास को नहीं जगायेंगे तब तक रात के इस समय में तो हमें कोई खाना नहीं मिल सकता। पर धनियॉ ने तो शर्म के मारे उसके पास जाने से मना कर दिया।

इस पर कुलफी राम ने कहा कि फिर तो भंडारघर में जाना ही पड़ेगा और वहीं कुछ देखना पड़ेगा। अगर उनकी किस्मत अच्छी होगी तो शायद वहॉ उनको कुछ खाने को मिल जाये।

धनियॉ उस भंडारघर के एक रोशनदान से हो कर भंडारघर में घुसा। उसने एक रस्सी अपनी कमर में बॉधी कुलफी राम के कन्धे पर चढ़ा और रोशनदान से हो कर भंडारघर में उतर गया। कुलफी राम बाहर ही खड़ा रहा।

प्लान यह था कि जब धनियॉ पेट भर कर खा लेता तो कुलफी राम उसकी रस्सी पकड़ कर खींच लेता। इस प्लान के अनुसार धनिया भंडारघर में पहुॅच गया।

पहले तो उसको वहॉ अॅधेरे की वजह से कुछ दिखायी नहीं दिया। पर जब वह अॅधेरे में कुछ देखने लायक हुआ तो उसको वहॉ कुछ शक्लें दिखायी दीं जैसे टीन के डिब्बे बक्से बोतलें बालटियॉ आदि।

वहॉ चावल और गेंहू के बोरे रखे थे पर खाने के लिये कुछ नहीं था। तभी धनियॉ को छत से लटकता मिट्टी का एक घड़ा

दिखायी दे गया। उसको देख कर वह खुश हो गया शायद उसमें उसके खाने लायक कोई चीज़ हो।

सो धनियॉ एक बक्से पर खड़ा हो गया और अपना हाथ जितना ऊॅचा ले जा सकता था ले गया पर फिर भी मुश्किल से वह उस घड़े की तली को ही छू सका।

फिर उसने कोने में खड़ी एक डंडी उठा ली और उसे उस घड़े पर मारी। उसकी मार से घड़े में दरार पड़ गयी और उसमें से किसी चीज़ की पतली सी धारा निकल पड़ी।

धनियॉ ने उस धारा से जो कुछ भी गिर रहा था खाने के लिये तुरन्त ही अपना मुॅह खोल दिया। उसने उसका बड़ा सा घूॅट सटका तो उसे पता चला कि वह तो शहद था।

कुछ मिनट तक धनियॉ उस घड़े के नीचे खड़ा रहा और शहद पीता रहा। जब उसने पेट भर कर शहद पी लिया तो अचानक ही उस घड़े का एक बड़ा सा टुकड़ा टूट गया और वह पतली सी धारा एक बहुत ही मोटी सी धारा में बदल गयी।

इससे पहले कि धनियॉ उस घड़े के नीचे से हटता उस घड़े का सारा शहद उसके ऊपर बिखर गया था। वह उसके बालों पर बिखर गया था। वह उसकी ऑखों और कानों पर से होता हुआ उसके कुर्ते तक चला गया था।

~

वह वहॉ से हटना चाहता था पर वह तो उसके पैरों के नीचे भी था। सो वह फर्श पर चिपक गया था। वह अपने दोस्त का नाम ले कर चिल्लाया तो कुलफी राम बोला कि वह चिन्ता न करे वह उसको बाहर निकाल लेगा।

पर यह कहना आसान था करना मुश्किल था। कुलफी राम एक पतला दुबला सा आदमी था जबकि धनियॉ इतना हल्का नहीं था। इसके अलावा धनियॉ के पैर शहद की वजह से फर्श पर चिपके हुए थे।

कुलफी राम ने उसको अपनी पूरी ताकत से खींचा पर वह धनियॉ के केवल पैर ही फर्श से उठा सका और वह भी केवल एकाध फुट। बस इतने में ही उसकी सॉस फूल गयी और धनियॉ धम्म की आवाज के साथ नीचे गिर पड़ा।

इस शोर से धनियॉ के ससुर की ऑख खुल गयी। वह धनियॉ की सास को ले कर भागा हुआ भंडारघर की तरफ आया।

उन दोनों को आते देखते ही कुलफी राम का तो दिल डूबने लगा। पर वह बहुत जल्दी सोचता था और जल्दी जवाब देता था। उसने अपनी उस हालत बचाने के लिये उनको एक कहानी बना कर सुनायी।

~

उसने कहा कि करीब पॉच साल से एक भूत मेरे पीछे पड़ा है। वह मेरे साथ तीर्थयात्रा पर जाना चाहता था पर एक समझदार आदमी होने के नाते मैंने उसको मना कर दिया।

पर उस भूत ने मेरा इस घर तक पीछा किया और अब मैं उसको यहॉ से बाहर निकालने के लिये अकेला रहना चाहता हूॅ। नहीं तो अगर उस भूत को उन दोनों में से कोई भी पसन्द आ गया तो फिर वह यह घर छोड़ कर कभी नहीं जायेगा।

धनियॉ की सास डर गयी और उसने कुलफी राम को तुरन्त ही भंडारघर की चाभी दे दी और दोनों तुरन्त ही अपने कमरे में वापस चले गये।

कुलफी राम ने भंडारघर का दरवाजा खोला और धनियॉ को बाहर आने के लिये कहा।

शहद में डूबा हुआ सारा चिपचिपा और कुछ गुस्सा सा धनियॉ बाहर आया और एक और कमरे में यह सोचते हुए चला गया कि वह उसका कमरा था। पर वह उसका कमरा नहीं था उसमें तो रुई भरी हुई थी जो उस परिवार के लिये रजाई बनाने के काम आने वाली थी।

बस जैसे ही वह उस कमरे के अन्दर गया वहॉ रखी हुई रुई उसके शहद लिपटे शरीर पर चिपक गयी। अब वह सचमुच में ही एक भूत जैसा लगने लगा।

~

उसके सास ससुर अपने कमरे के दरवाजे की झिरी में से यह सब तमाशा देख रहे थे। जब उन्होंने धनियॉ को रुई लिपटे देखा तो दोनों ने डर के मारे आपस में एक दूसरे को पकड़ लिया और अपना सिर छिपा कर वहीं खड़े रह गये। हिल भी न सके।

सो अब सब कुछ साफ था। कुलफी राम धनियॉ को पीछे वाले कुॅए पर ले गया। धनियॉ ठीक से नहाया धोया अपने रुई वाले कपड़े मिट्टी में गाड़ दिये और अपने कमरे में चला गया।

अगले दिन जब वह सो कर उठा तो वह वैसा ही साफ सुथरा और भोला भाला लग रहा था जैसा कि वह पहले दिन जब वहॉ आया था तब लग रहा था।

एक बार फिर सुबह के खाने में उसने थोड़ा सा ही खाया पर लौटते समय गॉव के बाहर वाले किनारे पर की दूकान पर दोनों ने पेट भर कर दूध जलेबी खायीं। और फिर दोनों दोस्त हॅसते हुए अपने अपने घर आ गये।

~

12 बॉसुरी[55]

बहुत साल पुरानी बात है एक आदमी अपनी दो पत्नियों के साथ रहता था। उसकी बड़ी पत्नी के तो कई बच्चे थे परन्तु छोटी पत्नी के केवल एक ही बेटा था।

एक दिन वह आदमी अपने सारे परिवार के साथ खेत पर गया। वहॉ सारे दिन सबने मिल कर काम किया फिर शाम को अपने अपने चाकू हल टोकरियॉ आदि इकट्ठी कीं और जल्दी जल्दी अपने घर चल दिये।

सात जंगल और सात नदियॉ पार कर वे सब अपने घर आये। अचानक उसकी छोटी पत्नी का बेटा बोला कि वह अपनी बॉसुरी तो खेत पर ही भूल आया था और अब वह उसको लाने के लिये अभी अभी वापस खेत पर जाना चाहता था।

उसकी मॉ ने रो कर उससे कहा भी कि इस समय रात को वह बॉसुरी लेने वहॉ न जाये। वह अगले दिन सुबह होते ही उसको नयी बॉसुरी दिला देगी।

[55] Flute – a folktale from Nigeria, Africa.

पर वह तो अड़ गया कि उसको तो वही बॉसुरी चाहिये क्योंकि वह बॉसुरी उसकी अपनी बनायी हुई थी और वह उस बॉसुरी को किसी भी कीमत पर बदलना नहीं चाहता था।

उसके पिता ने भी उसको बहुत समझाया और मना किया कि इस समय उसको खेत पर अपनी बॉसुरी लेने नहीं जाना चाहिये पर वह नहीं माना। आखिर कार उसके माता पिता ने उसको जाने तो दिया पर उससे होशियारी से जाने के लिये कहा।

जब वह खेत पर पहुँचा तो रात हो चुकी थी। वहॉ उसे भूत दिखायी दिये क्योंकि यह समय वहॉ भूतों के काम करने का था।

उन्होंने जब वहॉ एक बच्चे को देखा तो वे बहुत गुस्सा हुए। भूतों के नेता ने कहा — "ओ आदमी के बच्चे, तुझे यहॉ इस समय किसने भेजा है और तू यहॉ क्यों आया है?"

बेचारा बच्चा डर के मारे वहीं की वहीं खड़ा रह गया। बड़ी मुश्किल से उसके मुँह से निकला — "दिन में मेरे माता पिता यहॉ खेत पर काम करने आये थे। उस समय मैं यहॉ अपनी बॉसुरी भूल गया था अभी मैं वही लेने आया हूँ।"

भूतों के नेता ने पूछा कि अगर उसे उसकी बॉसुरी दिखायी जाये तो क्या वह उसे पहचान सकता है?

लड़का खुशी से बोला — "हॉ हॉ, क्यों नहीं। वह मेरी बॉसुरी है। मैं उसे पहचानूँगा क्यों नहीं।"

~

भूतों के नेता ने खाल के थैले में से एक सोने की बॉसुरी निकाली और उसको लड़के को दिखा कर पूछा — "क्या यह है तेरी बॉसुरी?"

लड़का बोला — "नहीं नहीं, यह मेरी बॉसुरी नहीं है।"

भूतों के नेता ने एक बार फिर उस चमडे के थैले में हाथ डाला और अबकी बार उसने उसमें से एक चॉदी की बॉसुरी निकाली और उसको दिखा कर उस लड़के से पूछा कि क्या वह थी उसकी बॉसुरी?

लड़का उदास हो कर बोला — "नहीं, यह बॉसुरी भी मेरी नहीं है।"

अबकी बार भूतों के नेता ने अपने थैले में से एक बॉस की बॉसुरी निकाली और उसको लड़के को दिखा कर पूछा — "क्या यह है तेरी बॉसुरी?"

लड़का उस बॉस की बॉसुरी को देखते ही खुशी से चिल्ला पड़ा — "हॉ, यही है मेरी बॉसुरी।"

भूतों का नेता बोला — "अगर यही है तेरी बॉसुरी तो इसे बजा कर दिखा न।"

लड़के ने भूतों के नेता के हाथ से बॉसुरी ले ली और उसे बजाना शुरू किया।

~

भूत उस लड़के की बॉसुरी सुन कर बहुत खुश हुए। भूतों का नेता बोला — "बच्चे, हम तेरी बॉसुरी सुन कर बहुत खुश हुए इसलिये हम तेरे माता पिता को एक भेंट देना चाहते हैं।"

ऐसा कह कर उसने दो छोटे भूतों को बुलाया और उनसे दो बर्तन लाने के लिये कहा। दोनों भूत तुरन्त ही दो बर्तन ले आये। भूतों के नेता ने उस लड़के से एक बर्तन लेने के लिये कहा।

बर्तन दोनों एक से थे, दोनों बन्द थे पर दोनों में से एक छोटा था और एक बड़ा। लड़के ने उनमें से छोटा वाला बर्तन उठा लिया।

भूतों के नेता ने कहा — "खुश रह बच्चे। जब तू घर पहुँच जाये तो अपने माता पिता के सामने ही इस बर्तन को तोड़ना।" लड़के ने भूतों के नेता का सिर झुका कर धन्यवाद किया और अपने घर चल पड़ा।

घर पहुँच कर लड़के ने वैसा ही किया जैसा कि भूतों के नेता ने उससे करने के लिये कहा था। उसने अपने माता पिता को बुलाया और सबसे पहले तो उसने अपने माता पिता को खेत पर जो कुछ भी हुआ था वह बताया और फिर उनके सामने ही उसने उस बर्तन को तोड़ दिया।

तुरन्त ही उनके घर का ऑगन अच्छी अच्छी चीज़ों से भर गया जैसे सोना, चॉदी, कॉसा, अच्छे अच्छे कपड़े, मखमल, अनेक प्रकार के खाने, गाय, बकरियॉ आदि। लड़के की मॉ ने उस सामान से दो टोकरियॉ भरीं और अपनी सौत को दे आयी।

परन्तु उस आदमी की बड़ी पत्नी यह सब देख कर इतनी जली भुनी कि उसने वह भेंट भी नहीं ली और चिन्ता की वजह से वह रात भर सो भी नहीं पायी।

सुबह उठते ही उसने अपनी सौत से उन सब चीज़ों को पाने का तरीका पूछा। छोटी पत्नी ने जो कुछ भी हुआ था वह सब उसको सच सच बता दिया।

अगले दिन तड़के ही उसने अपने बड़े बेटे को उठाया और उसको अपनी बॉसुरी लाने के लिये कहा। फिर बोली — "आज हम लोग अपने खेत पर जायेंगे।"

"पर मॉ हम लोग कल ही तो खेत पर गये थे।" लड़का बोला।

मॉ ने कहा — "लेकिन हम आज भी जायेंगे।" कह कर वह अपने बेटे के साथ खेत पर चली गयी। जब वे खेतों पर गये तो वहॉ कोई काम तो था नहीं क्योंकि सारा काम तो पहले ही दिन खत्म हो चुका था फिर भी सारा दिन वे लोग वहॉ रहे।

जब शाम हुई तो बड़ी पत्नी ने अपनी टोकरी उठायी और घर चलने के लिये तैयार हुई। तो लड़के ने भी अपनी बॉसुरी उठायी और वह भी अपनी मॉ के साथ घर चलने लगा।

जब वे घर की ओर चलने लगे तभी मॉ ने कहा — "अरे बेवकूफ लड़के, क्या तुझे मालूम नहीं कि बॉसुरी को कैसे भूला जाता है? चल छोड़ अपनी बॉसुरी यहीं और घर चल।"

अब क्योंकि यह बॉसुरी लड़के की अपनी बनायी हुई तो थी नहीं और न उसको बजानी ही आती थी इसलिये यह सुन कर लड़के ने बॉसुरी वहीं पड़ी छोड़ दी और मॉ के साथ घर चल दिया।

जैसे ही वे लोग घर में घुसे कि उसकी मॉ ने अपने बेटे से कहा "जा और खेत पर से अपनी बॉसुरी उठा ला।" लड़का बेचारा यह सुन कर रोने लगा।

वह रात में अकेले खेत पर जाने से डर रहा था इसलिये कि वह वहॉ अकेले नहीं जाना चाहता था क्योंकि उसको मालूम था कि रात को वहॉ पर भूत आते थे और वह उनसे बहुत डरता था।

परन्तु उसकी मॉ ने उसे घर के बाहर धकेलते हुए कहा — "जा और बिना बॉसुरी और बिना बर्तन के वापस नहीं आना।"

लड़का बेचारा डरते डरते खेत पर पहुँचा। वहॉ पहले दिन की तरह से भूत आ चुके थे। भूतों के नेता ने कहा — "ओ आदमी के

बच्चे, तुझे यहाँ इस समय किसने भेजा है और तू यहाँ क्यों आया है?"

लड़का डर के मारे रोते रोते बोला — "आज हम यहाँ खेत पर बिना किसी काम के आये थे। मैं दिन में यहाँ अपनी बाँसुरी छोड़ गया था तो मेरी माँ ने मुझे मेरी बाँसुरी और भेंट वाला बर्तन लाने के लिये भेजा है।"

भूतों के नेता ने पहले की तरह से थैले में से एक सोने की बाँसुरी निकाली और उसको उस लड़के को दिखा कर पूछा "क्या यह है तेरी बाँसुरी?"

अब इस लड़के ने तो बाँसुरी अपने हाथ से बनायी नहीं थी जो उसे उससे लगाव होता। वह सोने की बाँसुरी देख कर ललचा गया और बोला — "हाँ, यही है मेरी बाँसुरी।"

भूतों के नेता ने कहा — "अच्छा? यही है तेरी बाँसुरी? तो यह ले अपनी बाँसुरी। पर ज़रा इसे बजा कर तो दिखा।"

उस लड़के को तो बाँसुरी बजानी भी नहीं आती थी सो उसकी बाँसुरी से ऐसे ही कुछ बेमतलब आवाजें निकलने लगीं। वह लड़का बहुत परेशान हुआ पर कुछ कर नहीं सका क्योंकि उसने तो कभी बाँसुरी बजायी ही नहीं थी। थोड़ी ही देर में वह थक कर रुक गया।

सभी भूत खामोश खड़े थे किसी से कुछ कहते नहीं बन पा रहा था। तब भूतों के नेता ने ही दो छोटे भूतों को बुलाया और उनसे बोला — "लाओ वे दोनों बर्तन उठा लाओ।"

जैसे ही वे दो भूत दो बर्तन उठा कर लाये लड़के ने एक भूत के हाथ से बड़ा वाला बर्तन छीन लिया और जाने के लिये तैयार हुआ तो भूतों का नेता बोला — "बेटा, जब तू घर पहुँच जाये तभी अपने माता पिता के सामने ही इस बर्तन को तोड़ना।"

लड़का बोला "हॉ मुझे मालूम है।" और बिना धन्यवाद दिये अपने घर की तरफ दौड़ गया।

हॉफता हॉफता वह घर पहुँचा। बर्तन बहुत बड़ा था और भारी भी। उसकी मॉ घर के बाहर ही उसका इन्तजार कर रही थी। अपने बेटे को बड़ा सा बर्तन लाते देख कर वह बहुत खुश हुई।

लड़का हॉफते हॉफते ही बोला — "उन्होंने कहा है कि इस बर्तन को मैं अपने माता पिता के सामने ही तोड़ूँ सो पिता जी को और बुला लो।"

मॉ तुनक कर चिल्लायी — "तुम्हारे पिता को उस बर्तन के बारे में क्या मालूम है जो हम उनको बुलायें। इसको तो हम अपने आप ही तोड़ लेंगे।" और लड़के को अन्दर ला कर उसने अपनी झोंपड़ी का दरवाजा बन्द कर लिया।

~

उसने अपने सभी बच्चों को इकट्ठा किया और अपनी झोंपड़ी में बने सभी छेद और दरारें भी बन्द कर दीं ताकि कोई भी चीज़ उनमें से निकल कर बाहर दूसरी झोंपड़ियों की तरफ न जा सके।

फिर उसने वह बर्तन तोड़ दिया। बर्तन के टूटते ही उसमें से सब प्रकार की बीमारियॉ जैसे कोढ़, चेचक, तपेदिक आदि निकल पड़ीं और उन्होंने उस स्त्री और उसके बच्चों को वहीं मार दिया।

यह कहानी हमें कई शिक्षा देती है। पहली बात तो हमको लालची नहीं होना चाहिये। क्योंकि पहला वाला बच्चा लालची नहीं था इसी लिये वह दूसरों का आदर पा सका।

दूसरी बात यह कि बिना सोचे समझे दूसरों की नकल करने की आदत अच्छी नहीं होती। दूसरी मॉ ने अपने बच्चे से छोटी पत्नी के बच्चे की नकल करवायी तो क्या फल पाया।

और तीसरे हमें दूसरों के उपकारों का धन्यवाद जरूर देना चाहिये।

~

13 शिकारी और उसकी करामाती बॉसुरी[56]

भूतों की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश के बच्चे बड़े शौक से कहते और सुनते हैं।

एक बार ओजो[57] नाम का एक बहुत ही अच्छा शिकारी था। वह भी दूसरे योरुबा शिकारियों की तरह कई कई महीनों तक शिकार के लिये बाहर रहता था।

ओजो जंगल में जा कर ताड़ के पत्तों और डंडियों आदि से अपने रहने के लिये एक झोंपड़ी बना लेता और फिर वहॉ से अपना तीर कमान ले कर वह रोज शिकार के लिये निकल जाता।

हर रात सोने से पहले वह अपने लाये शिकार का मॉस भूनता और जब उसके पास काफी भुना मॉस इकट्ठा हो जाता तब वह उसे अपनी पत्नी के पास जाता। उसकी पत्नी उस भुने मॉस को बेच कर घर की जरूरत की चीज़ें खरीद लाती।

ओजो के पास तीन कुत्ते थे। उसने उनके बड़े अजीब से नाम रखे हुए थे। एक का नाम था "टुकड़े कर दो", दूसरे का नाम था "खा डालो" और तीसरे का नाम था "साफ कर दो"।

इन तीन कुत्तों के अलावा उसके पास एक पुरानी बॉसुरी भी थी जिसके बारे में ओजो का कहना था कि वह बड़ी करामाती थी।

---

[56] The Hunter and His Magic Flute – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[57] Ojo – name of the Nigerian hunter

~

उसका कहना था कि जंगल में वह कितनी भी दूर चला जाये पर जब भी वह वह बॉसुरी बजाता था उस बॉसुरी की आवाज उसके कुत्तों तक पहुँच जाती थी और उसको सुन कर उसके तीनों कुत्ते उसके पास भागे चले आते थे। इसलिये वह यह बॉसुरी हमेशा अपने पास ही रखता था।

एक बार शिकार पर जाते समय उसने अपने तीनों कुत्तों को घर में बॉध कर छोड़ दिया और अपनी पत्नी को कहा कि वह उनकी ठीक से देखभाल करे और किसी भी समय अगर वे ज़रा से भी बेचैन दिखायी दें तो वह उनको छोड़ दे उन्हें बॅधा न रहने दे।

ऐसा कह कर वह वहॉ से चल दिया।

तीन दिन के सफर के बाद वह एक ऐसी जगह पर आया जहॉ उसको अपना कैम्प डालना था। इस तरफ पहले वह कभी नहीं आया था। उसकी अनुभवी ऑखें बता रहीं थीं कि उसको शिकार के लिये यहॉ पर काफी जानवर मिलेंगे।

ओजो अपना कैम्प लगाने में लग तो गया पर वहॉ उसको बहुत डर लग रहा था। उसको कुछ ऐसा लग रहा था कि जैसे कोई उसको छिपे छिपे देख रहा है। और वह भी कोई आदमी या जानवर नहीं बल्कि कोई भूत देख रहा है।

~

जब वह छोटा था तो अक्सर जंगल में रहने वाले भूतों के बारे में सुनता रहता था। वह उनसे डरता भी था हालॉकि उसका उनसे कभी सामना नहीं हुआ था।

दूसरे शिकारियों ने तो उनको देखा भी था यहॉ तक कि उनकी तो जंगल की मॉ इयाबोम्बा[58] से मुलाकात भी हुई थी।

उनका कहना था कि इयाबोम्बा दस आदमियों के बराबर बड़ी है और उसके शरीर पर बहुत सारे भूखे मुँह लगे हुए हैं।

जब ओजो का कैम्प लग गया तो वह उसमें अन्दर आराम करने के लिये लेट गया। वह आराम करने के लिये लेट तो गया पर कोई उसको देख रहा था यह ख्याल अभी भी उसके दिमाग से निकला नहीं था।

लेटने के बाद उसको लगा कि कोई चीज़ उसके पास आ रही थी। वह उसको देखने के लिये उठ कर खड़ा हो गया कि इतने में उसने देखा कि जंगल की मॉ इयाबोम्बा उसके सामने खड़ी है।

वह उसको देख कर इतना डर गया कि उससे भागा भी नहीं जा सका। वह तो बस जहॉ था वहीं का वहीं खड़ा रह गया।

अचानक इयाबोम्बा बोली — "शिकारी, डर नहीं। मुझे मालूम है कि तू यहॉ क्यों आया है। अगर तू मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा तो मैं भी तुझे नहीं खाऊँगी।"

[58] Iyabomba – the mother of Forest

~

और जैसे वह अचानक वहॉ आयी थी वैसे ही अचानक वह वहॉ से चली भी गयी।

ओजो का शिकार करने का समय आ गया था पर वह सोच रहा था कि क्या इयाबोम्बा के वायदे पर भरोसा किया जा सकता है?

वह सारा दिन शिकार करता रहा और जब वह शाम को शिकार कर के अपने कैम्प लौटा तो जंगल की मॉ का डर उसके दिमाग से निकल चुका था।

रात को उसने अपना लाया मॉस काटा और उसे भूनने के लिये आग जलायी। मॉस भूना, खाना पकाया, खाना खाया और सो गया।

अगले दिन वह फिर शिकार पर निकल गया और जब वह शिकार ले कर फिर कैम्प लौटा तो उसे लगा कि कोई उसके पीछे उसके कैम्प में आया था।

उसे वहॉ इयाबोम्बा के बड़े बड़े पैरों के निशान पहचानने में देर नहीं लगी। जब वह अपनी झोंपड़ी के अन्दर घुसा तो उसने देखा कि उसका तो कल का भुना हुआ मॉस भी गायब था।

ओजो ने सोचा कोई बात नहीं शायद अब जंगल की मॉ सन्तुष्ट हो गयी होगी इसलिये उसने आग जला कर उस दिन का लाया मॉस भूनना शुरू कर दिया।

पर इयाबोम्बा अभी भी सन्तुष्ट नहीं हुई थी क्योंकि ओजो जब भी शिकार कर के कैम्प वापस लौटता तो अपना पहले दिन का लाया हुआ मॉस गायब पाता।

उसको यह भी डर था कि वह किससे पूछे कि इयाबोम्बा ऐसा क्यों करती थी वह रोज उसका मॉस क्यों ले जाती थी। इयाबोम्बा से तो वह यह बात पूछ ही नहीं सकता था क्योंकि तब तो शायद वह उसी को खा जाती।

एक हफ्ता गुजर चुका था। ओजो रोज शिकार करता, रोज मॉस भूनता पर उसके पास बचाया हुआ भुना हुआ मॉस ज़रा सा भी नहीं था।

ओजो का गुस्सा इसलिये और भी ज़्यादा बढ़ रहा था क्योंकि इतने ज़्यादा शिकार उसको पहले कभी किसी और जगह नहीं मिले थे। पर इस तरीके से तो अगर वह वहॉ पर एक साल भी और रहता तो भी शायद वह कुछ नहीं बचा पाता।

एक दिन ओजो के सब्र का बॉध टूट गया और उसका गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया। इस गुस्से ने उसका डर दूर कर दिया और उस दिन वह इयाबोम्बा का अपनी झोंपड़ी में ही बैठ कर इन्तजार करने लगा पर उस दिन वह वहॉ आयी ही नहीं।

अन्त में उसने अपना सामान बॉधा और वापस जाने लगा। जाते जाते वह चिल्लाया — "तुमने मेरे मारे शिकार का मॉस क्यों

~

खाया? क्या तुम्हारे जंगल में जो भी शिकारी आता है तुम हर उस शिकारी का मॉस चुरा लेती हो?"

उसका इतना बोलना था कि इयाबोम्बा अपने सारे मुँह खोले हुए जंगल में भयानक आवाज करती हुई ओजो के सामने आ खड़ी हुई जैसे कि वह उसको खा ही जायेगी।

ओजो वहॉ से भाग खड़ा हुआ। इयाबोम्बा उसको पीछे से बुला रही थी परन्तु ओजो तो बस भागा ही जा रहा था।

पर भागने का कोई फायदा नहीं था क्योंकि जंगल की मॉ बहुत बड़ी थी और वह पल भर में ही ओजो के पास आ गयी। उसको पास आया देख कर ओजो एक पेड़ पर चढ़ गया।

आश्चर्य की बात कि वह पेड़ पर नहीं चढ़ सकती थी इसलिये वह उस पेड़ के नीचे ही खड़ी हो गयी जिस पेड़ पर ओजो बैठा था और उसने नीचे से पेड़ का तना काटना शुरू कर दिया।

यह देख कर ओजो बहुत डर गया कि जब पेड़ कट जायेगा तब उसका क्या होगा। ओजो को तब अपनी बॉसुरी याद आयी और उसने अपनी बॉसुरी बजानी शुरू कर दी।

बॉसुरी की आवाज उसके कुत्तों के कानों में पड़ी। सुनते ही उसके घर में उसके तीनों कुत्ते भौंकने लगे। ओजो की पत्नी उनकी रस्सी खोलने गयी तो उसके रस्सी खोलने से पहले ही उन कुत्तों ने रस्सी तोड़ ली और वहॉ से भाग लिये।

इधर इयाबोम्बा जल्दी जल्दी पेड़ का तना काट रही थी। ओजो ने कुछ पल तो इन्तजार किया पर उसने देखा कि पेड़ तो बस गिरने ही वाला था।

उसने अपनी जेब से एक चमड़े का बटुआ निकाला और उसमें रखा जादुई पाउडर पेड़ पर डाल दिया इससे पेड़ फिर से साबुत हो गया।

इयाबोम्बा को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह पेड़ साबुत कैसे हो गया पर फिर भी उसने फिर से उस तने को काटना शुरू कर दिया।

पर जब भी पेड़ गिरने को होता तो ओजो उस पर थोड़ा सा जादुई पाउडर डाल देता और वह पेड़ फिर से साबुत हो जाता।

इस तरह पेड़ को काटते और साबुत करते करते काफी देर हो गयी। ओजो का पाउडर भी खत्म हो गया था और अब पेड़ फिर से गिरने वाला था वह बहुत परेशान था कि अब क्या होगा था कि तभी उसने देखा कि उसके तीनों कुत्ते भागे चले आ रहे हैं।

देखते देखते वे तीनों इयाबोम्बा पर टूट पड़े और थोड़ी ही देर में उन्होंने इयाबोम्बा को काम तमाम कर दिया और उसका काफी सारा मॉस खा लिया। ओजो पेड़ से नीचे उतर आया और अपने सामान और कुत्तों के साथ अपने घर वापस आने लगा कि तभी उसने देखा कि उसके सामने एक बहुत सुन्दर लड़की खड़ी है।

~

वह बोली — "मुझे इयाबोम्बा ने कैदी बना कर रखा हुआ था अब जब तुमने उसे मार दिया है तो मैं आजाद हो गयी हूँ। क्या तुम मुझे अपने घर ले चलोगे ओजो और मुझे अपनी पत्नी बनाओगे?"

ओजो को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह लड़की उसका नाम कैसे जानती थी। फिर भी वह उसको अपनी पत्नी बना कर अपने घर ले आया।

उसकी पहली पत्नी उन सबको देख कर बहुत खुश हुई और यह जान कर भी कि जंगल की माँ इयाबोम्बा मर चुकी है और उसके पति ने इस लड़की को उसके चंगुल से बचा लिया गया है। उसने उन सबका स्वागत किया और उस लड़की को घर में ठहरने की जगह दी।

पर उस रात को उस घर में एक अजीब घटना हुई। ओजो की दूसरी पत्नी उठी और एक बहुत बड़ी औरत के रूप में बदलने लगी जिसके बहुत सारे मुँह थे।

असल में यह कोई कैदी लड़की नहीं थी बल्कि यह इयाबोम्बा की बहिन थी और उसकी हत्या का बदला लेने के लिये ओजो की पत्नी बन कर आयी थी। पर तीनों कुत्तों ने उसको भी खा लिया। ओजो अब जब उस जंगल में जाता था तो उसको वहाँ कोई तंग नहीं करता था। वह वहाँ आराम से शिकार कर के घर लाता था। उसने फिर कभी दूसरी शादी भी नहीं की।

~

14 टिनटिन्यिन और भूतों की दुनियॉ का राजा[59]

भूतों की यह लोक कथा भी अफ्रीका के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बहुत पुरानी बात है जब योरुबा देश में टिनटिन्यिन नाम का एक लड़का रहता था। उसका पिता तो उसकी छोटी उम्र में ही नहीं रहा पर कुछ साल बाद उसकी मॉ भी चल बसी।

अब वह इस दुनियॉ में अकेला रह गया और कोई उसकी देखभाल करने वाला भी नहीं था।

वह जंगली जानवरों और पक्षियों के साथ जंगल में रहने लगा। उन्होंने ही उसको खाना खिलाया, उसको कपड़े पहनाये, उसकी देखभाल की और उसको बड़ा किया।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वहॉ रहते रहते उसने जानवरों और पक्षियों की भाषा भी सीख ली थी और योरुबा भाषा तो उसको आती ही थी।

उस जंगल में कुछ दूरी पर एक बड़ा शहर था जिसका राजा बहुत ताकतवर था। उस शहर में हर साल एक बहुत बड़ा त्यौहार मनाया जाता था।

[59] Tintinyin and the Unknown King of the Spirit World – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

~

टिनटिन्यिन हर साल उस त्यौहार में जाता था क्योंकि उसको नाचना, गाना, ढोल बजाना, अच्छे कपड़े पहनना सभी कुछ बहुत अच्छा लगता था। उस शहर का राजा देखने में भी सुन्दर था सो टिनटिन्यिन को वह राजा भी बहुत अच्छा लगता था।

पुराने समय में भूत[60] भी ऐसे त्यौहारों पर आया करते थे। बस उनको कोई पहचान नहीं पाता था क्योंकि वे सामान्य लोगों के रूप में आते थे और त्यौहार खत्म होने पर चुपचाप वापस चले जाया करते थे।

राजा को भी इस बात का पता था पर क्योंकि कोई उनको पहचान नहीं पाता था इसलिये वह यह बात यकीन के साथ नहीं कह सकता था। पर वह भी यह जानना चाहता था कि वाकई यह बात सच थी कि नहीं।

एक बार राजा ने इस बात का फैसला करने का निश्चय किया कि वाकई यह सच था या नहीं सो उसने इस त्यौहार से पहले ही अपने शहर में यह घोषणा करा दी कि जो भी आदमी इस त्यौहार में भूतों के राजा को पहचानेगा और उसे राजा को बतायेगा उसको बहुत सारी भेंटें इनाम में मिलेंगीं और शहर में ऊँचा ओहदा मिलेगा।

[60] Translated for the word “Ghost”

टिनटिन्यिन ने भी यह घोषणा सुनी। वह राजा के महल में गया और राजा से कहा कि वह भूतों के राजा को पहचान कर राजा को बतायेगा।

अब टिनटिन्यिन को तो यह पता भी नहीं था कि वह भूतों का राजा दिखायी कैसा देता होगा पर उसे विश्वास था कि उसके जंगल के साथी इस बारे में उसकी सहायता जरूर करेंगे।

जब राजा ने इस अजीब से जंगली लड़के के मुँह से ये शब्द सुने कि वह भूतों के राजा को पहचान लेगा तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि ऐसा लड़का भूतों के राजा को कैसे पहचान सकता है।

सो उसको धमकाने के लिये और उसे जनता को बेवकूफ बनाने से रोकने के लिये उसने टिनटिन्यिन से कहा कि अगर वह उसको न पहचान सका तो सजा के तौर पर उसकी भूतों के राजा के लिये बलि चढ़ा दी जायेगी।

इतना कहने पर भी राजा को यह सुन कर आश्चर्य हुआ कि वह अभी भी अपनी बात पर अड़ा था। उसने कहा कि अगर वह ऐसा न कर सका तो वह मरने के लिये तैयार था।

ऐसा कह कर वह लड़का वहाँ से चला गया और राजा आश्चर्य में पड़ा वहीं बैठा रह गया। वह यह कहे बिना न रह सका "यह लड़का भी अजीब है।"

त्यौहार के दिन टिनटिन्यिन ने देखा कि हर आदमी उसी को घूर रहा है। सारे शहर में टिनटिन्यिन को भूतों के राजा को पहचानने वाली बात फैल चुकी थी और सभी इस ताक में थे कि देखें क्या होता है कैसे वह लड़का भूतों के राजा को पहचानता है।

कुछ लोग टिनटिन्यिन के लिये दुखी भी थे कि यह बेचारा मुफ्त में ही मारा जायेगा क्योंकि इतनी भीड़ में भूतों के राजा को पहचानना आसान नहीं था।

शहर का राजा पेड़ों की छॉह में एक बड़े ऊॅचे सिंहासन पर बैठा था। उसने टिनटिन्यिन को बुलाया और कहा — "लड़के, अब बताओ वह भूतों का राजा इस भीड़ में कौन सा है।"

टिनटिन्यिन भी राजा से बात करने के बाद चिन्तित था क्योंकि हालॉकि उसने जंगल के सारे जानवरों और पक्षियों से कह रखा था कि उसको भूतों के राजा को पहचानना है पर अभी तक भूतों के राजा का कोई नामो निशान नजर नहीं आ रहा था।

वह परेशान सा यह सोच ही रहा था कि भूतों के राजा को पहचानने के लिये वह क्या करे कि उसको एक नन्हा सा ईगा चिड़ा[61] दिखायी दिया। नन्हा ईगा गा रहा था।

उसकी भाषा और तो कोई समझ नहीं पा रहा था पर टिनटिन्यिन की समझ में सब आ रहा था। वह गा रहा था —

[61] Ega Bird – a very small black and yellow bird found in Western Nigeria from Senegal to Cameroon countries

~

टिनटिन्यिन, हालॉकि तुमने बहुत बड़ा बोल बोला है
कि तुम भूतों के राजा को जानते हो जो मरे हुओं और शैतानों का राजा भी है
पर तुम उसे नहीं जानते और तुमने अपनी ज़िन्दगी दॉव पर लगा दी है
तुम मेरे दॉये पंख की सीध में देखो एक आदमी अकेला खड़ा है
उसके शरीर पर कोई ऐसा निशान नहीं है जिससे वह राजा लगे
वह एक डंडे पर झुका खड़ा है पर वही राजा है भूतों का और मेरे बेटे मैं तुम्हारा पिता हूॅ

इस तरह टिनटिन्यिन को पता चल गया कि उसका पिता ईगा चिड़े की आवाज में बोल रहा है और उसकी सहायता कर रहा है।

उधर शहर का राजा उसके जवाब के इन्तजार में था। वह बोला — "बताओ लड़के, वह भूतों का राजा कौन सा है। मैं तुम्हारे जवाब का इन्तजार कर रहा हूॅ।"

टिनटिन्यिन सीधा उस आदमी के पास गया और उसको पकड़ कर राजा के पास ले आया। जब लोगों ने देखा तो लोग हॅस पड़े कि या तो वह लड़का उनका बेवकूफ बना रहा है या फिर उस बूढ़े आदमी का।

तब उस बूढे आदमी ने अपना पैर खोल कर अपने टखने पर बॅधा एक काला मोती दिखाया। यही भूतों के राजा का निशान था। बस फिर उसने न तो राजा से ही कुछ कहा और न ही वह किसी और से बोला और गायब हो गया।

शहर के राजा ने अपना वायदा निभाया। उसने उसको बहुत सारी भेंटें दीं और शहर में ऊँचा ओहदा दिया। इसके बाद तो टिनटिन्यिन बहुत बड़ा आदमी हो गया।

हालॉकि भूतों के राजा को फिर किसी ने उस त्यौहार में नहीं देखा पर तब से उस शहर के किसी और राजा ने भी उसको देखने की इच्छा प्रगट नहीं की। पर लोगों का कहना है कि वह अभी भी एक गरीब आदमी के वेश में वहॉ आता है।

List of Stories of "Ghosts in Folktales"

1. The Haunted Tailor
2. Dauntless Man
3. Dauntless Little John
4. The Palace of the Doomed Queen
5. The Water Ghost and the Fisherman
6. The Loud Mouthed Woman
7. Rat's Wedding
8. The Ghost Brahman
9. The Ghostly Wife
10. The Ghost Who Was Afraid Being Bagged
11. The Ghost That Got Away
12. Flute
13. The Hunter and His Magical Flute
14. Tintinyin and the Unknown King of the Spirit World

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022